Think IAS...

दृष्टि The Vision

Think Drishti

संघ लोक सेवा आयोग (UPSC)

आधुनिक भारत

(भाग-2)

दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम (Distance Learning Programme)

Code: CSPM05

दृष्टि The Vision

संघ लोक सेवा आयोग (UPSC)

आधुनिक भारत

(भाग–2)

दृष्टि The Vision

641, प्रथम तल, डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
दूरभाष : 8750187501, 011-47532596
टोल फ्री : 1800-121-6260
Web : www.drishtiias.com
E-mail : online@groupdrishti.com

पाठ्यक्रम, नोट्स तथा बैच संबंधी updates निरंतर पाने के लिए निम्नलिखित पेज को "like" करें
www.facebook.com/drishtithevisionfoundation
www.twitter.com/drishtiias

UPSC DLP विषय सूची (Contents)

8.	गांधी युग : 1919-1948 ई.	5-41
9.	भारत का संवैधानिक विकास	42-54
10.	ब्रिटिश गवर्नर/गवर्नर जनरल/वायसराय	55-61
11.	आज़ादी के बाद का प्रारंभिक दौर	62-75
12.	राष्ट्र के गठन में विविध समस्याएँ	76-93
13.	विदेश नीति का नेहरू युग	94-101
14.	भारत-चीन युद्ध	102-106
15.	1964 के पश्चात् भारतीय विदेश नीति	107-112
16.	1947-64 के बीच भारतीय अर्थव्यवस्था	113-118
17.	1965-1991 के मध्य भारतीय अर्थव्यवस्था	119-124
18.	भारत-पाक युद्ध	125-129
19.	प्रधानमंत्री के रूप में इंदिरा गांधी का कार्यकाल	130-146
20.	1977-91 के बीच की राजनीतिक स्थिरता व अस्थिरता	147-161
21.	स्वतंत्र भारत में भूमि-सुधार	162-176

अध्याय
8

गांधी युग : 1919-1948 ई.
(Gandhian Era : 1919-1948 AD)

8.1 गांधीवादी आंदोलन (प्रथम चरण)
8.2 क्रांतिकारी आंदोलन का द्वितीय चरण
8.3 गांधीवादी आंदोलन (द्वितीय चरण)
8.4 भारत शासन अधिनियम, 1935
8.5 कॉन्ग्रेस में समाजवादी विचारधारा का उद्‌भव
8.6 देशी रियासतों में जन आंदोलन
8.7 द्वितीय विश्वयुद्ध और राष्ट्रीय आंदोलन
8.8 विभाजन के साथ स्वतंत्रता की दिशा में

8.1 गांधीवादी आंदोलन (प्रथम चरण) *[Gandhian Movement (1st Phase)]*

मोहनदास करमचंद गांधी (1869–1948 ई.) 9 जनवरी, 1915 को दक्षिण अफ्रीका से भारत वापस आए। वे 1893 ई. में एक भारतीय मुस्लिम व्यापारी दादा अब्दुल्ला का मुकदमा लड़ने दक्षिण अफ्रीका गए थे। वहाँ पर उन्होंने भारतीयों के साथ हो रहे भेदभावपूर्ण व्यवहार को देखा। एक बार जब वे दक्षिण अफ्रीका में ट्रेन से यात्रा कर रहे थे तो उसी दौरान मेरित्सबर्ग नामक स्टेशन पर एक अंग्रेज़ ने धक्का देकर उन्हें ट्रेन से बाहर निकाल दिया। इस घटना से गांधी जी को एक नई दिशा मिली। अपने दक्षिण अफ्रीका प्रवास के दौरान ही गांधी जी ने भारतीयों के प्रति अपनाई जाने वाली रंगभेद की नीतियों के विरुद्ध संघर्ष प्रारंभ किया। अपने आंदोलन को संगठनात्मक रूप प्रदान करने तथा दिशा देने हेतु उन्होंने कई संस्थाओं, जैसे- नटाल इंडियन कॉन्ग्रेस, टॉलस्टॉय फार्म (जर्मन शिल्पकार मित्र कालेन बाख की सहायता से) तथा फीनिक्स आश्रम की स्थापना की। दक्षिण अफ्रीका में ही गांधी जी ने 'इंडियन ओपीनियन' नामक समाचार-पत्र का प्रकाशन भी किया। गांधी जी द्वारा दक्षिण अफ्रीका में सफलतापूर्वक आंदोलन का संचालन किये जाने के परिणामस्वरूप वहाँ की सरकार द्वारा सन् 1914 ई. तक अधिकांश भेदभावपूर्ण वाले कानूनों को रद्द कर दिया गया। यह गांधी जी की प्रथम सफलता थी जो उन्होंने अहिंसा के मार्ग द्वारा प्राप्त की।

1915 ई. में भारत आने के पश्चात् ही गांधी जी का भारतीय राजनीति में पदार्पण हुआ। गांधी जी ने गोपालकृष्ण गोखले को अपना राजनीतिक गुरु माना। इस समय प्रथम विश्वयुद्ध चल रहा था तथा गांधी जी ने इस युद्ध में अंग्रेज़ों का समर्थन किया और भारतीयों को सेना में शामिल होने के लिये प्रोत्साहित किया। इसी कारण उन्हें 'भर्ती करने वाला सार्जेंट' कहा जाने लगा। ब्रिटिश सरकार ने उन्हें कैसर-ए-हिंद की उपाधि से विभूषित किया। गांधी जी का मानना था कि प्रथम विश्वयुद्ध में सहयोग के बदले भारतीयों को स्वराज की प्राप्ति होगी। गांधी जी ने 1915 ई. में अहमदाबाद में साबरमती आश्रम की स्थापना की। इसका उद्‌देश्य रचनात्मक कार्यों को प्रोत्साहन देना था। गांधी जी का भारतीय राजनीति में एक प्रभावशाली नेता के रूप में उदय उत्तर बिहार के चंपारण आंदोलन, गुजरात के खेड़ा कृषक आंदोलन तथा अहमदाबाद के श्रमिक विवाद का सफलतापूर्वक नेतृत्व करने के पश्चात् हुआ। जहाँ चंपारण और खेड़ा आंदोलन कृषकों की समस्याओं से संबंधित थे, वहीं अहमदाबाद के श्रमिकों के विवाद की पृष्ठभूमि में कॉटन टेक्सटाइल मिल-मालिक और मज़दूरों के बीच मज़दूरी बढ़ाने तथा प्लेग बोनस दिये जाने से संबंधित विवाद था। अहमदाबाद में प्लेग की समाप्ति के पश्चात् मिल-मालिक बोनस को समाप्त करना चाहते थे। मिल-मालिकों ने केवल 20% बोनस को स्वीकार किया और धमकी दी कि जो कर्मचारी यह बोनस नहीं स्वीकार करेगा उसे नौकरी से निकाल दिया जाएगा। गांधी जी 35% बोनस दिये जाने की मज़दूरों की मांग का समर्थन करते हुए स्वयं हड़ताल पर बैठ गए। इस पूरे प्रकरण पर न्यायाधिकरण ने भी मज़दूरों की मांग को सही ठहराते हुए 35% बोनस दिये जाने का आदेश दिया। इन मिल-मालिकों में से एक गांधी जी के मित्र अंबालाल साराभाई भी थे, जिन्होंने साबरमती आश्रम के निर्माण हेतु बहुत अधिक मात्रा में धन दान दिया था। अंबालाल साराभाई की बहन अनुसुइया भी अहमदाबाद मज़दूर आंदोलन में गांधी जी के साथ थीं।

सत्याग्रह के आरंभिक प्रयोगों की सफलता ने गांधी जी को जनसाधारण के समीप ला खड़ा किया। गांधी जी के आदर्शों, दार्शनिक चिंतन, विचारधारा और जीवन-पद्धति ने उन्हें साधारण जनता के जीवन के साथ एकीकृत कर दिया। वे गरीब, राष्ट्रवादी एवं विद्रोही भारत के प्रतीक बन गए। हिंदू-मुस्लिम एकता, स्त्रियों की सामाजिक स्थिति को सुधारने तथा छुआछूत के विरुद्ध कार्य करना उनके अन्य प्रमुख लक्ष्यों में सम्मिलित थे। 1919 ई. के जलियाँवाला बाग हत्याकांड ने ब्रिटिश सरकार के प्रति गांधी जी के दृष्टिकोण को परिवर्तित कर दिया।

रही होगी, भारत नई जीवन स्वतंत्रता लेकर जागेगा। यह क्षण जो इतिहास में विरले ही आता है, ऐसा होता है जब हम पुरातन से नूतन की ओर जाते हैं, जब एक युग समाप्त होता है, जब राष्ट्र की बहुत दिनों से दबी-आत्मा को वाणी मिल जाती है। यह उपयुक्त है कि हम इस पवित्र-क्षण में भारत तथा उसकी जनता की सेवा और उससे भी अधिक मानवता के उद्देश्य की पूर्ति के लिये अपने आपको अर्पित करें। आज हम एक दुर्भाग्यपूर्ण अवधि को समाप्त कर रहे हैं और भारत को अपने महत्त्व का फिर एक बार अहसास हो रहा है। आज हम जिस उपलब्धि को मना रहे हैं, वह निरंतर प्रयास की उपलब्धि है, जिसके परिणामस्वरूप हम उन प्रतिज्ञाओं को पूरा कर सकें जिन्हें हमने कितनी बार लिया है।"

इसके बाद लॉर्ड माउंटबेटन को संविधान सभा ने स्वतंत्र भारत का प्रथम गवर्नर जनरल नियुक्त किया तथा जवाहरलाल के नेतृत्व में नए मंत्रिमंडल को शपथ दिलाई गई।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. भारत में ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये: **UPSC (Pre) 2019**
   1. महात्मा गांधी 'गिरमिटिया (इंडेंचर्ड लेबर) प्रणाली के उन्मूलन में सहायक थे।
   2. लार्ड चेम्सफोर्ड की 'वार कॉन्फरेंस' में महात्मा गांधी ने विश्व युद्ध के लिये भारतीयों की भर्ती से संबंधित प्रस्ताव का समर्थन नहीं किया था।
   3. भारत के लोगों द्वारा नमक कानून तोड़े जाने के परिणामस्वरूप, औपनिवेशिक शासकों द्वारा भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को अवैध घोषित कर दिया गया था।

   उपर्युक्त में से कौन-से कथन सही हैं?
   (a) केवल 1 और 2 (b) केवल 1 और 3
   (c) केवल 2 और 3 (d) 1, 2 और 3
2. उन्होंने मैज़िनी, गैरिबॉल्डी, शिवाजी तथा श्रीकृष्ण की जीवनी लिखी; वे अमेरिका में कुछ समय के लिये रहे तथा वे केंद्रीय सभा के सदस्य भी निर्वाचित हुए। वे थे **UPSC (Pre) 2018**
   (a) अरविंद घोस (b) विपिन चन्द्र पाल
   (c) लाला लाजपत राय (d) मोतीलाल नेहरू
3. 1927 की बटलर कमेटी का उद्देश्य था– **UPSC (Pre) 2017**
   (a) केंद्रीय एवं प्रांतीय सरकारों की अधिकारिता निश्चय करना।
   (b) भारत के सेक्रेटरी ऑफ स्टेट की शक्तियाँ निश्चित करना।
   (c) राष्ट्रवादी प्रेस पर सेंसर व्यवस्था अधिरोपित करना।
   (d) भारत सरकार एवं देशी रियासतों के बीच संबंध सुधारना।
4. भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष के संबंध में, निम्नलिखित घटनाओं पर विचार कीजिये: **UPSC (Pre) 2017**
   1. रायल इंडियन नेवी में गदर
   2. भारत छोड़ो आंदोलन के प्रारंभ
   3. द्वितीय गोलमेज सम्मेलन

   उपर्युक्त घटनाओं का सही कालानुक्रम क्या है?
   (a) 1-2-3 (b) 2-1-3
   (c) 3-2-1 (d) 3-1-2
5. सर स्टैफर्ड क्रिप्स की योजना में यह परिकल्पना थी कि द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद **UPSC (Pre) 2016**
   (a) भारत को पूर्ण स्वतंत्रता प्रदान की जानी चाहिये
   (b) स्वतंत्रता प्रदान करने से पहले भारत को दो भागों में विभाजित कर देना चाहिये
   (c) भारत को इस शर्त के साथ गणतंत्र बना देना चाहिये कि वह राष्ट्रमंडल में शामिल होगा
   (d) भारत को डोमिनियन स्टेटस दे देना चाहिये
6. रॉलेट सत्याग्रह के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं? **UPSC (Pre) 2015**
   1. रॉलेट अधिनियम 'सेडिशन कमिटी' की सिफारिश पर आधारित था।
   2. रॉलेट सत्याग्रह में गांधी जी ने होमरूल लीग का उपयोग करने का प्रयास किया।
   3. साइमन कमीशन के आगमन के विरुद्ध हुए प्रदर्शन रॉलेट सत्याग्रह के साथ-साथ हुए।

   नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये–
   (a) केवल 1
   (b) केवल 1 और 2
   (c) केवल 2 और 3
   (d) 1, 2 और 3

7. इनमें से किसने अप्रैल 1930 ई. में नमक कानून तोड़ने के लिये तंजौर तट पर एक अभियान संगठित किया था? **UPSC (Pre) 2015**
   (a) वी.ओ. चिदंबरम पिल्लै
   (b) सी. राजगोपालाचारी
   (c) के. कामराज
   (d) एनी बेसेंट

8. कैबिनेट मिशन के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं? **UPSC (Pre) 2015**
   1. इसने एक संघीय सरकार के लिये सिफारिश की।
   2. इसने भारतीय न्यायालयों की शक्तियों का विस्तार किया।
   3. इसने ICS में और अधिक भारतीयों का विस्तार किया।

   नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये–
   (a) केवल 1
   (b) केवल 2 और 3
   (c) केवल 1 और 3
   (d) इनमें से कोई नहीं।

9. साइमन कमीशन के आने के विरुद्ध भारतीय जन-आंदोलन क्यों हुआ? **UPSC (Pre) 2013**
   (a) भारतीय 1919 ई. के अधिनियम की कार्यवाही का पुनरीक्षण कभी नहीं चाहते थे।
   (b) साइमन कमीशन ने प्रांतों में द्विशासन की समाप्ति की संस्तुति की थी।
   (c) साइमन कमीशन में कोई भी भारतीय सदस्य नहीं था।
   (d) साइमन कमीशन ने देश के विभाजन का सुझाव दिया था।

10. भारत छोड़ो आंदोलन किसकी प्रतिक्रिया में प्रारंभ किया गया? **UPSC (Pre) 2013**
    (a) कैबिनेट मिशन योजना (b) क्रिप्स प्रस्ताव
    (c) साइमन कमीशन रिपोर्ट (d) वेवेल योजना

11. भारतीय इतिहास के संदर्भ में, प्रांतों से संविधान सभा के सदस्य- **UPSC (Pre) 2013**
    (a) उन प्रांतों के लोगों द्वारा सीधे निर्वाचित हुए थे।
    (b) भारतीय राष्ट्रीय कॉन्ग्रेस तथा मुस्लिम लीग द्वारा नामित हुए थे।
    (c) प्रांतीय विधानसभाओं द्वारा निर्वाचित हुए थे।
    (d) सरकार द्वारा, संवैधानिक मामलों में उनकी विशेषता के लिये चुने गए थे।

12. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिये:

सूची-I	सूची-II
A. नागपुर झंडा सत्याग्रह	1. 1923
B. वायकोम सत्याग्रह	2. 1924-25
C. अकाली आंदोलन	3. 1922-27
D. हिंदू महासभा का गठन	4. 1915

कूट:

	A	B	C	D
(a)	1	3	2	4
(b)	1	2	3	4
(c)	2	1	4	3
(d)	2	4	1	3

13. निम्नलिखित में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
    1. हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन का गठन चंद्रशेखर आज़ाद ने भगत सिंह के साथ मिलकर किया था।
    2. काकोरी षड्यंत्र में हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन ने बड़ी भूमिका निभाई थी।
    3. शांति घोष तथा सुनीति चौधरी ने चटगाँव शस्त्रागार पर हमले में भागीदारी निभाई थी।

    कूट:
    (a) केवल 2 (b) केवल 2 और 3
    (c) केवल 1 और 3 (d) 1, 2 और 3

14. निम्नलिखित में से किसका संबंध नेहरू रिपोर्ट से नहीं था?
    1. गवर्नर जनरल का पद समाप्त किया जाना।
    2. सांप्रदायिक आधार पर पृथक् निर्वाचन मंडल की व्यवस्था करना।
    3. मूल अधिकारों को प्रतिपादित करना।
    4. नागरिकता को परिभाषित किया जाना।

    कूट:
    (a) केवल 1, 3 और 4 (b) केवल 1 और 2
    (c) केवल 3 और 4 (d) 1, 2, 3 और 4

15. निम्नलिखित में से किसे सीमांत गांधी की संज्ञा दी जाती है?
    (a) खान अब्दुल गफ्फार खान
    (b) मौलाना अबुल कालाम आज़ाद
    (c) मौलाना मोहम्मद अली
    (d) हसन मोहानी

16. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:
    1. जियालरंग आंदोलन सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान हुआ था।
    2. जियालरंग आंदोलन से संबद्ध गैडिनल्यू को 'रानी' की उपाधि जवाहरलाल नेहरू ने दी थी।

    उपरोक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
    (a) केवल 1
    (b) केवल 2
    (c) 1 और 2 दोनों
    (d) न तो 1 और न ही 2

17. सविनय अवज्ञा आंदोलन के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-से कथन सही हैं?
    1. करों की नाअदायगी इस आंदोलन का एक अंग थी।
    2. इस आंदोलन का सूत्रपात महात्मा गांधी द्वारा नमक कानून तोड़ने से हुआ था।
    3. सी.राजगोपालाचारी, टी.के. माधवन, के. कलप्पन ने इस आंदोलन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

    कूट:
    (a) केवल 1 और 3 (b) केवल 2 और 3
    (c) केवल 1 और 2 (d) 1, 2 और 3

18. निम्नलिखित में से किसे 'दिल्ली चलो' आंदोलन के नाम से भी जाना जाता है?
    (a) व्यक्तिगत सत्याग्रह (b) भारत छोड़ो आंदोलन
    (c) सविनय अवज्ञा आंदोलन (d) असहयोग आंदोलन

19. जलियाँवाला बाग हत्याकांड की प्रतिक्रियास्वरूप निम्नलिखित में से किसने वायसराय की कार्यकारिणी परिषद से त्यागपत्र दे दिया था?
    (a) शंकरन नायर (b) रवींद्रनाथ टैगोर
    (c) विट्ठलभाई पटेल (d) मोतीलाल नेहरू

20. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:
    1. खिलाफत आंदोलन का मुख्य उद्देश्य खलीफा के सम्मान, शक्ति और सर्वोच्चता की पुनर्स्थापना करना था।
    2. रॉलेट एक्ट के प्रावधानों और जलियाँवाला बाग हत्याकांड ने असहयोग आंदोलन की पृष्ठभूमि तैयार कर दी थी।
    3. असहयोग आंदोलन के प्रावधानों में सरकारी शिक्षण संस्थानों का विरोध करना सम्मिलित था।

    उपरोक्त में से कौन-से कथन सही हैं?
    (a) केवल 1 और 4 (b) केवल 2 और 3
    (c) केवल 1 और 3 (d) 1, 2 और 3

21. साइमन कमीशन का गठन किस वर्ष हुआ था?
    (a) 1928 (b) 1927
    (c) 1929 (d) 1930

22. कॉन्ग्रेस के किस अधिवेशन में प्रस्ताव पारित कर पूर्ण स्वराज को अपना लक्ष्य घोषित किया गया था?
    (a) कराची (b) लाहौर
    (c) दिल्ली (d) फैजपुर

23. गांधी जी की 11 सूत्री मांग की पूर्ति न होने पर निम्नलिखित में से कौन-सा आंदोलन आरंभ हुआ?
    (a) असहयोग आंदोलन
    (b) नील सत्याग्रह
    (c) खेड़ा सत्याग्रह
    (d) सविनय अवज्ञा आंदोलन

24. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है?
    (a) प्रथम गोलमेज सम्मेलन में कॉन्ग्रेस के किसी प्रतिनिधि ने भाग नहीं लिया था।
    (b) गांधी-इर्विन समझौते का स्वागत देश के सभी बड़े नेताओं ने किया था।
    (c) सांप्रदायिक पंचाट के तहत केवल मुसलमानों और यूरोपीय लोगों के लिये पृथक् निर्वाचक मंडल का प्रावधान किया गया था।
    (d) ज्योतिबा फुले ने हरिजन सेवक संघ की स्थापना की थी।

25. निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प सही कालक्रमानुसार व्यवस्थित है?
    (a) सांप्रदायिक पंचाट, प्रथम गोलमेज सम्मेलन, पूना पैक्ट, द्वितीय गोलमेज सम्मेलन
    (b) प्रथम गोलमेज सम्मेलन, सांप्रदायिक पंचाट, द्वितीय गोलमेज सम्मेलन, पूना पैक्ट
    (c) प्रथम गोलमेज सम्मेलन, द्वितीय गोलमेज सम्मेलन, सांप्रदायिक पंचाट, पूना पैक्ट
    (d) द्वितीय गोलमेज सम्मेलन, तृतीय गोलमेज सम्मेलन, सांप्रदायिक पंचाट, पूना पैक्ट

26. कृषक प्रजा पार्टी की स्थापना निम्नलिखित में से किसने की थी?
    (a) एच.ए. अंसारी (b) फजलुल हक
    (c) सिकंदर खान (d) इनमें से कोई नहीं।

27. 1937 के प्रांतीय चुनाव के बाद मुस्लिम लीग ने निम्नलिखित में से किसके साथ मिलकर बंगाल में संयुक्त सरकार का गठन किया था?
    (a) कृषक प्रजा पार्टी
    (b) यूनियनिस्ट पार्टी
    (c) कॉन्ग्रेस
    (d) भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी

28. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:
    1. चित्तरंजन दास, मोहम्मद अली जिन्ना आदि ने असहयोग प्रस्ताव का विरोध किया था।
    2. अली बंधुओं ने असहयोग प्रस्ताव को स्वीकार किया था।

    उपरोक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
    (a) केवल 1
    (b) केवल 2
    (c) 1 और 2 दोनों
    (d) न तो 1 और न ही 2

29. नेशनल लिबरल लीग का गठन निम्नलिखित में से किन नेताओं ने किया था?
    1. तेज़ बहादुर सप्रू
    2. विपिनचंद्र पाल
    3. श्रीनिवास शास्त्री
    4. गोपाल कृष्ण गोखले

    कूट:
    (a) केवल 1, 2 और 4
    (b) केवल 1, 2 और 3
    (c) केवल 3 और 4
    (d) 1, 2, 3 और 4

30. वर्ष 1932 में महात्मा गांधी ने निम्नलिखित में से किस कारण आमरण अनशन आरंभ कर दिया था?
    (a) दलितों को आरक्षण मिल जाने के कारण।
    (b) दलितों के लिये पृथक् निर्वाचक मंडल की व्यवस्था स्थापित किये जाने के कारण।
    (c) नेहरू रिपोर्ट की सिफारिशों के प्रभावी न होने के कारण।
    (d) इनमें से कोई नहीं।

उत्तरमाला

1. (b)	2. (c)	3. (d)	4. (c)	5. (d)	6. (b)	7. (b)	8. (a)	9. (c)	10. (b)
11. (c)	12. (b)	13. (a)	14. (b)	15. (a)	16. (c)	17. (d)	18. (a)	19. (a)	20. (d)
21. (b)	22. (b)	23. (d)	24. (a)	25. (a)	26. (b)	27. (d)	28. (c)	29. (b)	30. (b)

दीर्घउत्तरीय प्रश्न

1. 1940 के दशक के दौरान सत्ता हस्तांतरण की प्रक्रिया को जटिल बनाने में ब्रिटिश साम्राज्यिक सत्ता की भूमिका का आकलन कीजिये। **UPSC (Mains) 2019**
2. गाँधीवादी प्रावस्था के दौरान विभिन्न स्वरों ने राष्ट्रवादी आंदोलन को सुदृढ़ एवं समृद्ध बनाया था। विस्तारपूर्वक स्पष्ट कीजिये। **UPSC (Mains) 2019**
3. वर्तमान समय में गांधी के विचारों के महत्त्व पर प्रकाश डालिये। **UPSC (Mains) 2018**
4. पिछली शताब्दी के तीसरे दशक से भारतीय स्वतंत्रता की स्वप्न दृष्टि के साथ संबद्ध हो गए नए उद्देश्यों के महत्त्व को उजागर कीजिये। **UPSC (Mains) 2017**
5. स्वतंत्रता संग्राम में, विशेष तौर पर गांधीवादी चरण के दौरान महिलाओं की भूमिका का विवेचन कीजिये। **UPSC (Mains) 2016**
6. स्वतंत्रता के लिये संघर्ष में सुभाषचंद्र बोस एवं महात्मा गांधी के मध्य दृष्टिकोण की भिन्नताओं पर प्रकाश डालिये। **UPSC (Mains) 2016**
7. महात्मा गांधी के बिना भारत की स्वतंत्रता की उपलब्धि कितनी भिन्न हुई होती? चर्चा कीजिये। **UPSC (Mains) 2015**
8. अपसारी उपागमों और रणनीतियों के होने के बावजूद, महात्मा गांधी और डॉ. बी.आर. अंबेडकर का दलितों की बेहतरी का एक समान लक्ष्य था। स्पष्ट कीजिये। **UPSC (Mains) 2015**
9. किन प्रकारों से नौसैनिक विद्रोह भारत में अंग्रेज़ों की औपनिवेशिक महत्त्वाकांक्षाओं की शव-पेटिका में लगी अंतिम कील साबित हुआ था? **UPSC (Mains) 2014**

10. आयु, लिंग तथा धर्म के बंधनों से मुक्त होकर, भारतीय महिलाएँ भारत के स्वाधीनता संग्राम में अग्रणी बनी रहीं। विवेचना कीजिये।
11. शिक्षा पर टैगोर के विचार की विवेचना कीजिये। रूढ़िगत शिक्षा पद्धति से यह कहाँ तक भिन्न था?
12. भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में महात्मा गांधी की भूमिका पर एक संक्षिप्त चर्चा करें।
13. असहयोग आंदोलन और सविनय अवज्ञा आंदोलन की प्रवृत्तियों को स्पष्ट कीजिये।
14. भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में महात्मा गांधी की रणनीतियों की समीक्षा कीजिये।
15. "एम.के. गांधी द्वारा खिलाफत आंदोलन का समर्थन एक बड़ी भूल थी, क्योंकि यह एक ऐसा अन्य देशीय मुद्दा था जिसने भारतीय राष्ट्रीयता को जड़ों से ही काट दिया था।" कथन का समालोचनात्मक परीक्षण कीजिये।
16. 'भारत छोड़ो आंदोलन' के महत्त्व पर आलोचनात्मक टिप्पणी कीजिये।
17. 'क्रिप्स मिशन' के प्रस्तावों पर संक्षिप्त चर्चा करते हुए क्रिप्स मिशन की असफलता के कारणों का उल्लेख कीजिये।
18. 'अगस्त प्रस्ताव' पर आलोचनात्मक टिप्पणी कीजिये।
19. 'भारत छोड़ो आंदोलन ब्रिटिश शासन के विरुद्ध स्वत: स्फूर्त जनविद्रोह था।' टिप्पणी कीजिये।
20. रॉयल भारतीय नौसेना के विद्रोह के महत्त्व को रेखांकित कीजिये।
21. कैबिनेट मिशन योजना पर कॉन्ग्रेस एवं लीग की प्रतिक्रिया क्या थी?
22. राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं ने न केवल गांधीवादी अहिंसक माध्यमों से महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई अपितु क्रांतिकारी गतिविधियों में भी उनकी भूमिका उल्लेखनीय रही। विवेचना कीजिये।

अध्याय
9

भारत का संवैधानिक विकास (Constitutional Development of India)

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में भारत के संवैधानिक विकास की यात्रा सन् 1599 से आरंभ होती है, जब महारानी एलिजाबेथ ने ईस्ट इंडिया कंपनी को एक राजलेख द्वारा पंद्रह वर्षों के लिये व्यापार का अधिकार प्रदान किया, जिसे '1599 ई. का चार्टर' कहा जाता है। इस चार्टर के माध्यम से कंपनी को पूर्वी देशों में व्यापार का अधिकार सौंपा गया तथा कंपनी की समस्त शक्तियाँ 24 सदस्यीय परिषद में निहित कर दी गईं। '1726 ई. के चार्टर' से कलकत्ता, बंबई तथा मद्रास प्रेसिडेंसी के गवर्नरों को विधि-निर्माण की शक्ति सौंपी गई।

रेग्युलेटिंग एक्ट, 1773 *(Regulating Act, 1773)*

भारत के संवैधानिक इतिहास में सन् 1773 का रेग्युलेटिंग एक्ट विशेष महत्त्व रखता है। यह अधिनियम (Act) भारत में कंपनी के प्रशासन पर ब्रिटिश संसदीय नियंत्रणों के प्रयासों की शुरुआत थी। परिणामतः अब कंपनी के शासनाधीन क्षेत्रों का प्रशासन कंपनी के व्यापारियों का निजी मामला नहीं रहा। इस एक्ट में भारत में कंपनी के शासन के लिये पहली बार लिखित संविधान (Written Constitution) प्रस्तुत किया गया। इस एक्ट में उल्लिखित प्रावधान निम्नवत् थे-

- इस एक्ट के द्वारा कलकत्ता में एक सुप्रीम कोर्ट (Supreme Court) की स्थापना की गई। इसमें एक मुख्य न्यायाधीश तथा तीन अवर न्यायाधीश होते थे। सुप्रीम कोर्ट के निर्णय के विरुद्ध अपील लंदन स्थित प्रिवी काउंसिल (Privy Council) में की जा सकती थी। इस सर्वोच्च न्यायालय को प्राथमिक तथा पुनर्विचार संबंधी अधिकार दिये गए। यह न्यायालय सन् 1774 में गठित किया गया तथा सर एलीजा एम्पे को इसका मुख्य न्यायाधीश नियुक्त किया गया।
- मद्रास एवं बंबई प्रेसिडेंसियों को कलकत्ता प्रेसिडेंसी के अधीन कर दिया गया, जिसका प्रमुख एक गवर्नर जनरल (Governor General) होता था। गवर्नर जनरल का नियंत्रण अपूर्व (Absolute) था। बंगाल में एक प्रशासक मंडल बनाया गया, जिसमें गवर्नर जनरल (अध्यक्ष) तथा चार सदस्य जिन्हें पार्षद कहा जाता था, को नियुक्त किया गया। इस प्रशासक मंडल में निर्णय बहुमत से होते थे। केवल मत बराबर होने की स्थिति में ही गवर्नर जनरल निर्णायक मत का प्रयोग कर सकता था।
- प्रशासक मंडल के सदस्यों का निर्वाचन पाँच वर्षों के लिये किया जाता था तथा वे कंपनी के निदेशक मंडल (Board of Directors) की सिफारिश पर ब्रिटिश क्राउन (British Crown) द्वारा ही हटाए जा सकते थे।
- इस अधिनियम के अनुसार कर्मचारी किसी भी प्रकार का उपहार, दान या पारितोषिक ग्रहण नहीं कर सकते थे।
- गवर्नर जनरल का वेतन 25 हज़ार पौंड, गवर्नर का 10 हज़ार पौंड, सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश का 8 हज़ार पौंड तथा अवर न्यायाधीश का वेतन 6 हज़ार पौंड वार्षिक निश्चित कर दिया गया।

इस प्रकार रेग्युलेटिंग एक्ट के माध्यम से एक ईमानदार शासन का आधारभूत सिद्धांत निर्धारित किया गया तथा इस नियामक अधिनियम के द्वारा ब्रिटिश भारत के लिये एक लिखित संविधान प्रणाली का सूत्रपात हुआ। वास्तव में इस अधिनियम के माध्यम से 'एक व्यक्ति अथवा कुछ व्यक्तियों के स्थान पर एक संस्था के शासन' की स्थापना हो गई।

पिट्स इंडिया एक्ट, 1784 *(Pit's India Act; 1784)*

कंपनी पर अपने प्रभाव को मज़बूत करने के उद्देश्य से ब्रिटिश पार्लियामेंट ने सन् 1784 में पिट्स इंडिया एक्ट पारित किया। इसके माध्यम से छः-सदस्यीय नियंत्रण बोर्ड (Board of Control) की व्यवस्था की गई। इस नियंत्रण बोर्ड को भारतीय प्रशासन के संबंध में निरीक्षण, निर्देशन तथा नियंत्रण संबंधी व्यापक अधिकार दिये गए, हालाँकि कंपनी के व्यापार को अछूता छोड़ दिया गया। इस एक्ट के प्रमुख प्रावधान इस प्रकार थे-

- भारत का प्रशासन गवर्नर जनरल व उसकी तीन-सदस्यीय परिषद के हाथ में रहेगा। परिषद सहित गवर्नर जनरल को इस बात का अधिकार होगा कि वह अन्य प्रेसिडेंसियों के कार्यों का निरीक्षण, नियंत्रण तथा निर्देशन कर सके। गवर्नर जनरल को अभी भी बहुमत के आधार पर कार्य करना होता था। पिट्स अधिनियम के द्वारा प्रांतीय गवर्नरों की कार्यकारिणी के सदस्यों की संख्या चार से घटाकर तीन कर दी गई। इनमें से एक सदस्य स्थानीय मुख्य सेनापति होता था। इस अधिनियम के द्वारा बंबई तथा मद्रास प्रेसिडेंसियों को भी गवर्नर जनरल व उसकी परिषद के अधीन कर दिया गया। इसमें यह भी निर्दिष्ट था कि गवर्नर जनरल की परिषद के सदस्य अनुबंधित सिविल सेवा (Covenanted Civil Service) से ही नियुक्त किये जाएंगे।

अध्याय
10

ब्रिटिश गवर्नर/गवर्नर जनरल/वायसराय
(British Governor/Governor General/Viceroy)

10.1 बंगाल के गवर्नर
10.2 बंगाल के गवर्नर जनरल
10.3 भारत के गवर्नर जनरल
10.4 भारत के वायसराय

10.1 बंगाल के गवर्नर *(Governor of Bengal)*

क्लाइव: 1757–1760, 1765–1767

अवध के नवाब शुजाउद्दौला तथा मुगल सम्राट शाहआलम के साथ 1765 में 'इलाहाबाद की संधि', बंगाल में **द्वैध शासन, श्वेत विद्रोह,** कर्मचारियों द्वारा उपहार लेने पर प्रतिबंध, **'सोसायटी फॉर ट्रेड'** की स्थापना।

हालवेल : 1760

यह क्लाइव के बाद बंगाल का स्थानापन्न गवर्नर बना। इसी ने ब्लैक होल की घटना का वर्णन किया था।

वेंसिटार्ट : 1760–65

बक्सर के युद्ध के समय वेंसिटार्ट ही बंगाल का गवर्नर था।

वेरेलस्ट : 1767–69

द्वैध शासन के समय यह बंगाल का गवर्नर था।

कर्टियर : 1769–72

इसके समय में भी बंगाल में द्वैध शासन जारी रहा। 1770 में बंगाल में आधुनिक भारत का प्रथम अकाल पड़ा।

वॉरेन हेस्टिंग्स : 1772–74

यह बंगाल का अंतिम गवर्नर था। इसने बंगाल में द्वैध शासन को समाप्त कर दिया।

10.2 बंगाल के गवर्नर जनरल *(Governor General of Bengal)*

वॉरेन हेस्टिंग्स : 1774–1785

रेग्युलेटिंग एक्ट, 1773 के तहत वॉरेन हेस्टिंग्स बंगाल का प्रथम गवर्नर जनरल बना, प्रथम आंग्ल-मराठा युद्ध (1775–82), द्वितीय आंग्ल मैसूर युद्ध (1780–84), रेग्युलेटिंग एक्ट के तहत कलकत्ता में उच्चतम न्यायालय की स्थापना (1774), नंद कुमार को गलत आरोप में फाँसी (1775), पिट्स इंडिया एक्ट (1784), भारत में पंचवर्षीय फिर एक वर्षीय बंदोबस्त व्यवस्था, बनारस की संधि (1773), कलकत्ता में सरकारी टकसाल की स्थापना, दस्तक के प्रयोग पर प्रतिबंध। वॉरेन हेस्टिंग्स पर भारत में किये गए कार्यों के लिये इंग्लैंड में महाभियोग चलाया गया।

लॉर्ड कॉर्नवालिस : 1786–1793

तृतीय आंग्ल मैसूर युद्ध (1790–92), कलकत्ता, मुर्शिदाबाद, ढाका तथा पटना में 4 प्रांतीय न्यायालयों की स्थापना, बंगाल में स्थायी भूमि बंदोबस्त प्रणाली की शुरुआत (1793), भारतीय नागरिक सेवा का जनक, न्यायिक क्षेत्र में 'शक्ति के पृथक्करण' के सिद्धांत का जन्म, कॉर्नवालिस संहिता 1793, रेवेन्यू बोर्ड की स्थापना।

अध्याय
11

आज़ादी के बाद का प्रारंभिक दौर (Initial Phase After Independence)

11.1 देशी रियासतों का एकीकरण	11.2 पुर्तगाली उपनिवेशों का विलय
11.3 शरणार्थियों की समस्या	11.4 सांप्रदायिक हिंसा की समस्या

15 अगस्त, 1947 को भारत को आज़ादी मिली। स्वतंत्रता दिवस का औपचारिक समारोह एक राष्ट्र के पुनर्निर्माण के संकल्प के साथ शुरू हुआ। इसमें चौधरी खलिकुज्ज़मा ने जहाँ हिंदू-मुस्लिम एकता की बात कही, वहीं सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने पूर्व-पश्चिम संश्लेषण के आधार पर राष्ट्र निर्माण की बात कही। फिर आज़ाद देश के भावी प्रधानमंत्री नेहरू ने संविधान सभा तथा राष्ट्र को संबोधित करते हुए 'ट्राइस्ट विद डेस्टिनी' (Tryst with destiny) नामक अपने अविस्मरणीय भाषण में भारतीय जनता की भावनाओं को व्यक्त करते हुए कहा- "मध्य रात्रि की इस बेला में जब पूरी दुनिया नींद के आगोश में सो रही है, हिंदुस्तान एक नई ज़िंदगी और आज़ादी के वातावरण में अपनी आँखें खोल रहा है। यह एक ऐसा क्षण है, जो इतिहास में बहुत ही कम प्रकट होता है, जब हम पुराने युग से एक नए युग में प्रवेश करते हैं, जब एक युग खत्म होता है और जब एक देश की बहुत दिनों से रखी हुई आत्मा अचानक अपनी अभिव्यक्ति पा लेती है।"

जब स्वतंत्र भारत ने अपने नव-निर्माण का कार्य प्रारंभ किया तो उसके पास सिर्फ समस्याएँ ही नहीं, कई अनमोल रत्न भी थे। उनमें सबसे बड़ी संपदा थी, उच्च क्षमता व आदर्श वाले समर्पित महान नेताओं की एक लंबी कतार। नेहरू के साथ नेताओं का एक विशाल समूह खड़ा था जिन्होंने स्वतंत्रता की लड़ाई में यादगार भूमिका निभाई थी। सरदार पटेल दृढ़ इच्छा शक्ति के स्वामी तथा प्रशासनिक कार्यों में निपुण थे। इसके अलावा विद्वान अब्दुल कलाम आज़ाद, विद्वता तथा पांडित्य से भरपूर राजेंद्र प्रसाद और तीक्ष्ण बुद्धि संपन्न सी. राजगोपालाचारी तथा राज्य स्तर पर भी कई महत्त्वपूर्ण नेता थे- जैसे यू.पी. में गोविंद बल्लभ पंत, पश्चिम बंगाल में बी.सी. राय, बंबई में बी.जी. खेर तथा मोरारजी देसाई। ये सभी अपने-अपने प्रदेशों के निर्विवाद, प्रख्यात राजनीतिक शक्ति तथा जन नेता की छवि वाले थे। इन सभी नेताओं को आधुनिक तथा लोकवादी प्रशासन चलाने के लिये पर्याप्त कुशलता प्राप्त थी।

कॉन्ग्रेस के बाहर समाजवादी आचार्य नरेंद्र देव और जय प्रकाश नारायण, कम्युनिस्ट पी.सी. जोशी और अजय घोष, उदार संप्रदायवादी श्यामा प्रसाद मुखर्जी और दलित नेता डॉ. बी.आर. अंबेडकर थे। थोड़ा और विस्तृत दायरे में यदि देखा जाए तो प्रसिद्ध दार्शनिक डॉ. एस. राधाकृष्णन, शिक्षाविद् डॉ. जाकिर हुसैन और ब्रिटेन में भारत की आज़ादी के लिये संघर्ष करने वाले वी.के. कृष्ण मेनन तथा अनेक अन्य समर्पित गांधीवादी नेता थे।

स्वतंत्र भारत के समस्त नेता व्यक्तिगत रूप से ईमानदार तथा सादा जीवन व्यतीत करने वाले थे। समस्त कॉन्ग्रेसी नेताओं के स्वप्न में स्वतंत्र भारत की तस्वीर एक समान ही थी। सभी नेता तीव्र सामाजिक और आर्थिक रूपांतरण तथा समाज व राजनीति के लोकतांत्रीकरण के प्रति पूर्णत: समर्पित थे। राष्ट्रीय आंदोलन के मूल्यों व आदर्शों के प्रति उनकी एक मौलिक सहमति थी। इस प्रकार सबने मिलकर एक सुदृढ़ भारत के निर्माण का प्रयास किया।

आज़ाद भारत का प्रथम मंत्रिमंडल न केवल एक समावेशी भारत का प्रतिनिधित्व करता है बल्कि यह असहमतियों के प्रति परस्पर सहमति के जज़्बे का भी द्योतक है। यह भारत में शुरुआती स्तर से ही लोकतंत्र की मज़बूती की कहानी प्रस्तुत करता है। इस मंत्रिमंडल में दो लोगों का संबंध उद्योग जगत से था तो एक व्यक्ति सिख समुदाय का प्रतिनिधित्व करता था। इसके अतिरिक्त इस सूची में तीन ऐसे लोग भी शामिल थे जो जन्मजात कॉन्ग्रेस विरोधी रहे थे। इनमें से एक थे- मद्रास के आर.के. षणमुगम शेट्टी, जिनके बारे में यह कहा जाता था कि वे वित्त संबंधी मामलों के बेहतरीन जानकारों में से एक थे। दूसरे इस तरह के व्यक्ति थे डॉ. भीमराव अंबेडकर, जो कानून के मशहूर ज्ञाता थे। इस क्रम में तीसरे व्यक्ति श्यामा प्रसाद मुखर्जी, जो बंगाल के अग्रणी नेता थे तथा इनका संबंध हिंदू महासभा से भी था। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान जब कॉन्ग्रेस के नेता जेलों में बंद थे तो ये सब अलग-अलग कारणों से उस आंदोलन से अलग रहे थे, लेकिन जब देश आज़ाद हो गया तो नेहरू व उनके सहयोगियों ने सभी प्रकार के मताग्रहों को बड़ी बुद्धिमत्तापूर्वक किनारे कर दिया। इस संदर्भ में गांधी जी ने पहले ही सतर्क कर दिया था कि 'आज़ादी हिंदुस्तान को मिल रही है, कॉन्ग्रेस को नहीं।' गांधी जी ने उनसे कहा था कि मंत्रिमंडल के गठन में सबसे योग्य व्यक्तियों को जगह मिलनी चाहिये, चाहे वह किसी भी पार्टी का क्यों न हो।

अध्याय
12

राष्ट्र के गठन में विविध समस्याएँ
(Difficulties in the Formation of the Country)

12.1 भाषायी समस्या
12.2 राज्यों का पुनर्गठन
12.3 जनजातीय समुदाय की समस्याएँ
12.4 क्षेत्रीय असमानता के मुद्दे
12.5 अल्पसंख्यकों और दलितों की समस्याएँ

स्वतंत्रता के बाद से ही देश को कई तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ रहा था। उनमें राष्ट्रीय एकता को बनाकर रखना तथा राष्ट्र को मज़बूती प्रदान करना प्रमुख चुनौतियाँ थीं। भारतीय राष्ट्र का बनना अचानक घटित होने वाली घटना न होकर एक ऐतिहासिक प्रक्रिया का परिणाम थीं। भारतीय सभ्यता में विविधता के लक्षण को हम प्राचीन काल से ही देख सकते हैं। जैसा कि कविवर रवींद्रनाथ टैगोर ने भी माना है कि भारत की एकता भावनाओं की एकता है। मुगलों के शासन के दौरान ही भारतीयों में राजनीतिक, प्रशासनिक व आर्थिक एकीकरण के तत्त्व पूरी तरह से विकसित हो गए थे। उपनिवेशीकरण की प्रक्रिया ने भारत के एकीकरण की प्रक्रिया को और सुदृढ़ बना दिया।

स्वतंत्रता के दौरान होने वाले राष्ट्रीय आंदोलन ने भारतीयों को राजनीतिक व भावनात्मक रूप से जोड़कर उन्हें एक राष्ट्र का स्वरूप दे दिया लेकिन अभी भी भारत पूरी तरह से राष्ट्र नहीं कहा जा सकता था, बल्कि यह राष्ट्र बनने की प्रक्रिया में था। भारतीय राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया दीर्घकालीन व सतत् रूप से चलने वाली प्रक्रिया थी। राष्ट्रीय आंदोलन के नेतागण, जो विभिन्न क्षेत्र, भाषा व धर्म से संबद्ध थे, भी जब इस नए गणतंत्र की बुनियाद रख रहे थे तो उन्होंने भारत के एकीकरण और राष्ट्रीय एकता की प्रक्रिया को न सिर्फ बनाए रखना चाहा बल्कि उसे भविष्य में और ज़्यादा विकसित करने के बारे में सोचा। राष्ट्रीय आंदोलन के नेताओं के वक्तव्यों से यह बात पूरी तरह स्पष्ट होती है कि "भारत की एकता का पालन-पोषण मेरा पेशा है।" वस्तुतः भारत दुनिया का सबसे अधिक व जटिल सांस्कृतिक विभिन्नताओं वाला देश है। भिन्न-भिन्न भाषाई समूह, विभिन्न सांस्कृतिक और भौगोलिक-आर्थिक क्षेत्र, कई धर्मों व पंथों के लोगों का साथ में निवास करना भारत-भूमि की विशिष्टता को दर्शाता है। तमाम तरह की विविधताओं के उपस्थित होने के बाद भी इसकी विविधता, इसकी एकता के मार्ग में कभी बाधा नहीं बनी। अतः राष्ट्र निर्माताओं ने भी इस राष्ट्र का निर्माण वृहद् आधार पर करना ही उचित समझा।

राष्ट्र निर्माताओं ने भारत की विविधता को एक समस्या के रूप में न देखते हुए बल्कि सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ इसे एक शक्ति का स्रोत माना। इस प्रकार स्वतंत्र भारत का निर्माण 'विविधता में एकता' की अवधारणा के साथ हुआ। यहाँ विखंडनकारी प्रवृत्तियाँ भी पर्याप्त रूप में विद्यमान थीं। स्वतंत्रता के बाद भारतीय राष्ट्र का निर्माण एक वृहद् रणनीति के तहत किया गया था। इसमें क्षेत्रीय समानता, राजनीतिक व संस्थागत संसाधनों का कुशल संचालन, सर्वानुकूल सामाजिक ढाँचे का विकास, सामाजिक न्याय को प्रोत्साहित करने वाली नीतियाँ, समस्त प्रकार की असमानताओं का उन्मूलन और समाज के हर वर्ग को समान अवसर उपलब्ध कराना शामिल था। भारतीय संविधान का मौलिक ढाँचा भी इस प्रकार का था कि विघटनकारी प्रवृत्तियों का दमन किया जा सके। भारतीय संसद ने भी इस दिशा में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया। भारतीय संसद एक ऐसा मंच था जहाँ सभी तरह की राजनीतिक शक्तियाँ अपने विचार देश के सम्मुख रख सकें।

आज़ादी के बाद नियोजित आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के लिये सरकार द्वारा गठित योजना आयोग का स्वरूप भी अखिल भारतीय स्तर का था। आयोग ने क्षेत्रीय आर्थिक विषमताओं को दूर करने में तथा राज्यों के बीच आर्थिक संसाधनों का वितरण भी बड़े ही निष्पक्ष ढंग से किया था। भारतीय संविधान में भी समस्त नागरिकों को धर्म, जाति व लिंग आधारित भेदभाव को समाप्त कर, समाज के हर वर्ग को पूरी समानता देने की बात कही गई। आरक्षण तथा सकारात्मक भेदभाव के माध्यम से भारतीय संविधान ने वंचित वर्गों के हितों को पुष्ट करने का प्रयास किया। सामाजिक न्याय व समरसता को बढ़ावा देने के लिये जमींदारी प्रथा को पूरी तरह से समाप्त कर दिया गया। समस्त प्रकार की सामाजिक बुराइयाँ यथा बेगार, बंधुआ मजदूरी आदि को पूरी तरह से समाप्त कर दिया गया ताकि राष्ट्रीय अस्मिता के निर्माण में किसी प्रकार का अवरोध उत्पन्न न हो।

इस प्रकार भारतीय राष्ट्रीय एकता को मज़बूती प्रदान करने का काम किया गया। लेकिन विखंडनकारी तत्त्व भी पर्याप्त मात्रा में मौजूद थे। इन तत्त्वों ने बहुत जल्दी ही सिर उठाना शुरू कर दिया था तथा राष्ट्रीय एकता तार-तार होने लगी थी। स्वतंत्रता के बाद के आरंभिक वर्षों में सबसे बड़ा विभाजनकारी मुद्दा भाषा की समस्या थी। इस समस्या की वजह से देश की राजनीतिक व सांस्कृतिक एकता खतरे में पड़ती हुई दिखाई दे रही थी। भाषायी समस्या राष्ट्र के शैक्षणिक व आर्थिक विकास, रोज़गार व अन्य आर्थिक अवसर तथा राजनीतिक सत्ता तक पहुँच बनाने जैसे तरह-तरह के सवालों से भी जुड़ा मुद्दा था।

अध्याय
13

विदेश नीति का नेहरू युग (Nehru Era of Foreign Policy)

13.1 भारतीय विदेश नीति की अंतर्राष्ट्रीय भूमिका 13.2 भारत का पड़ोसियों के साथ संबंध

भारत की विदेश नीति के मूलभूत तत्त्व राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान ही निर्मित होने शुरू हो गए थे, जब राष्ट्रीय नेतृत्व ने विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय मुद्दों पर अपनी विचारधारा के अनुसार नीतियाँ बनानी शुरू कर दी थीं। एक राष्ट्र के रूप में स्वतंत्र विदेश नीति पर चलने का प्रयत्न आज़ादी के बाद की भारतीय राजनीति की विशेषता थी। भारतीय विदेश नीति लंबे इतिहास और हाल की घटनाओं की परिणति थी। विश्व परिस्थितियों में क्रांतिकारी परिवर्तनों के बावजूद आज़ादी के संघर्ष और आज़ादी के आरंभिक वर्षों में विकसित विशेषताओं की निरंतरता बाद के वर्षों में भी बनी रही। भारतीय विदेश नीति के मुख्य शिल्पकार पंडित जवाहरलाल नेहरू थे। स्वतंत्रता के बाद से मृत्युपर्यंत तक भारतीय विदेश नीति इनके वृहद् मानवतावादी व्यक्तित्व तथा सिद्धांतों के आस-पास ही घूमती रही। इस दौरान स्वतंत्र आवाज़ सिर्फ चुनाव नहीं बल्कि एक आवश्यकता थी। भारत सिर्फ निष्पक्ष या सैनिक गुटों से दूर ही नहीं रहा बल्कि इसने अपनी आवश्यकतानुसार तत्कालीन महाशक्तियों का उपयोग भी देशहित में किया। भारतीय विदेश नीति में गुटनिरपेक्षता के सिद्धांत का अर्थ था–हर मुद्दे पर आज़ादी से रुख अपनाना, सही या गलत की स्वयं पहचान करना।

प्रत्येक देश की विदेश नीति का निर्धारण उस काल से होता है जिसमें इसे लागू किया जाता है। इस पर इसके इतिहास व भौगोलिक स्थिति का भी प्रभाव पड़ता है। विदेश नीति के विकास में भू-राजनीति एक महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। इसके अतिरिक्त समय विशेष पर किसी देश की अपनी विशेष आवश्यकताएँ होती हैं जिनको अनदेखा नहीं किया जा सकता है। किसी देश की विदेश नीति को समझने और उनका विश्लेषण करने में इन तमाम कारणों को ध्यान में रखना ज़रूरी है। भारत सन् 1947 में स्वाधीन हुआ और इसके सामने दुनिया में अपनी छवि विकसित करने और उस काल की अंतर्राष्ट्रीय परिस्थिति से सामंजस्य स्थापित करने जैसी चुनौतियाँ थीं। भारत की विदेश नीति पर स्वाधीन भारत के पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू की गहरी छाप थी। उन्होंने इसको पाला-पोसा था, जीवन और शक्ति प्रदान की थी और अनेकानेक उपायों से इसे आकार दिया था। लेकिन उन्होंने इसे गढ़ा नहीं था। नेहरू ने खुद ही स्वीकार किया था कि भारत की विदेश नीति की जड़ें भारत की सभ्यता और परंपराओं में, भारत के स्वतंत्रता संग्राम में, इसकी भौगोलिक स्थिति में और शांति-सुरक्षा, विकास तथा इस जगत में एक स्थान के लिये भारत की तलाश में स्थित थी। उन्हीं के शब्दों में, "हमारी नीति को 'नेहरू नीति' कहना बिल्कुल गलत है...इसे मैंने जन्म नहीं दिया। यह नीति भारत की परिस्थिति में, भारत के अतीत की सोच में, भारत के संपूर्ण दृष्टिकोण में निहित है, यह निहित है भारतीय मानस के उस अनुकूलन में जो स्वाधीनता संग्राम के दौरान हुआ था और यह आज की दुनिया के हालात में निहित है।" नेहरू पर अक्सर यह आरोप लगाया जाता था कि विदेश नीति के मामले में वह आदर्शवादी और नैतिकतावादी हैं। दरअसल वह इनमें से कोई नहीं थे। अंतर्राष्ट्रीय मामलों में भारत के हितों या इसकी संप्रभुता का बलिदान किये बगैर उन्होंने देश को शीतयुद्ध के बारूदी सुरंगों भरे क्षेत्र के बीच चलाने में भारी यथार्थवाद को प्रदर्शित किया था। लोग उन हालात, घरेलू तथा अंतर्राष्ट्रीय, दोनों को भूल जाते हैं, जिनमें नेहरू ने भारत की विदेश नीति को स्वरूप दिया था।

सन् 1947 में जब स्वाधीनता प्राप्त हुई भारत के पास नाममात्र की सैनिक और आर्थिक शक्ति थी। विभाजन सेना में भी हुआ था और इसका एक हिस्सा पाकिस्तान चला गया था। जहाँ तक अर्थव्यवस्था का संबंध है, यह कहा जाता था कि भारत में तब एक पिन भी नहीं बनती थी। नेहरू का मानना था कि अपने मुट्ठी भर संसाधनों का इस्तेमाल प्राथमिकता के आधार पर आर्थिक विकास के लिये निवेश करने में करना चाहिये अथवा सैनिक तैयारियों के लिये करना चाहिये। जो सैनिक शक्ति मजबूत आर्थिक नींव पर आधारित नहीं, वह स्थायी नहीं होगी, वह बालू पर बनाई गई नींव जितनी क्षणिक होगी। अनेक देशों के उदाहरण सामने थे, जैसे कि उस काल का पाकिस्तान और थाईलैंड, जिन्होंने मूलतया सैनिक शक्ति पर भरोसा किया था, जिसे उनकी अर्थव्यवस्था का समर्थन प्राप्त नहीं था। इन पर सदा अस्थिर शासकों का राज रहा और वे लगातार दूसरे देशों पर निर्भर रहे थे। नेहरू अत्यंत यथार्थवादी थे। वे जानते थे कि देश का स्थायित्व और इसका सामाजिक सामंजस्य इसकी आर्थिक शक्ति पर टिका होता है। उनकी समझ थी कि वह प्रत्येक पैसा जो वे आर्थिक विकास में लगा रहे हैं, वह अंतिम विश्लेषण में राष्ट्र की सुरक्षा और जीवन क्षमता की पक्की गारंटी है। सैनिक शक्ति का महत्त्व है लेकिन इसको हासिल करने के लिये एक मजबूत आर्थिक

अध्याय
14

भारत-चीन युद्ध (India-China War)

14.1 युद्ध की पृष्ठभूमि एवं घटनाक्रम
14.2 भारत-चीन युद्ध के निष्कर्ष व परिणाम

14.1 युद्ध की पृष्ठभूमि एवं घटनाक्रम *(Background and Events of India-China War)*

सही मायने में देखा जाए तो 1950 के पूर्व भारत और चीन के बीच राजनीतिक संबंध निम्नस्तरीय थे, लेकिन सांस्कृतिक स्तर पर दोनों देशों के बीच अत्यधिक घनिष्ठता थी। भारत से चीन तक बौद्ध धर्म के प्रचार ने सांस्कृतिक संबंधों की स्थापना की थी। प्राचीन सिल्क व्यापार के आधार पर दोनों देशों के बीच व्यापारिक संबंध भी स्थापित हुए थे। बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार के दौरान कई भारतीयों ने चीन की यात्रा की तथा कई चीनी छात्रों ने नालंदा विश्वविद्यालय में शिक्षा प्राप्त की। दसवीं शताब्दी में बौद्ध धर्म के पतन के बाद भी दोनों देशों के संबंधों में घनिष्ठता बनी रही। भारत-चीन संबंधों को सबसे गहरा आघात तब लगा जब एशिया में साम्राज्यवाद व उपनिवेशवाद का विस्तार हो गया।

1947 में भारत की स्वतंत्रता के बाद और सन् 1949 में चीन के जनवादी लोकतंत्र की स्थापना के बाद दोनों देशों ने विदेश नीति के बदले घरेलू विकास को प्राथमिकता दी। दोनों देशों ने परस्पर राजनयिक संबंधों की भी स्थापना की, लेकिन दोनों देशों के बीच वैचारिक मतभेद भी विद्यमान थे। जहाँ चीन सोवियत संघ के साथ मिलकर अमेरिका की साम्राज्यवादी नीतियों का विरोध कर रहा था वहीं भारत ने इन दोनों महाशक्तियों के साथ समान दूरी बनाकर गुटनिरपेक्षता की संकल्पना पर कार्य करना प्रारंभ किया। वैचारिक मतभेद के बावजूद भी दोनों देशों ने शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के लिये पंचशील समझौता किया। इस दौरान दोनों देशों के राजनीतिक संबंध में कुछ सुधार आया तथा इसी प्रकार के माहौल में 'हिंदी-चीनी भाई-भाई' का नारा दिया गया। लेकिन 1954 में ही चीन ने अक्साई चिन को अपना भू-भाग बता दिया तथा इधर से एक सड़क का निर्माण करके मतभेदों को और गंभीर बना दिया। भारत ने यह स्पष्ट कर दिया था कि तिब्बत के क्षेत्र अथवा संप्रभुता पर उसका कोई दावा नहीं था लेकिन उसके व्यापार को बाधित नहीं किया जाना चाहिये। मैकमोहन रेखा को भी चीन ने कभी भी अंतर्राष्ट्रीय सीमा के रूप में मान्यता नहीं दी। सीमा-विवाद के कारण ही दिन-प्रतिदिन भारत-चीन के बीच 'हिंदी-चीनी भाई-भाई' का रिश्ता 'हिंदी-चीनी बाय-बाय' के रूप में बदलता चला गया। चीन ने भारतीय संप्रभुता वाले एक बड़े क्षेत्र पर अपना दावा करके इस समस्या को और गंभीर बना दिया।

आज़ादी के बाद भारत ने अपनी स्वतंत्र विदेश नीति बनाते हुए अपने पड़ोसी देशों के साथ मित्रतापूर्ण संबंध रखने की कोशिश की और चीन के संबंध में भी इस नीति का पालन किया। इधर सीमा विवाद को लेकर दोनों देशों के बीच पहले से ही गर्मी थी। इस बीच तिब्बत की समस्या भी बढ़ने लगी थी। तिब्बत पर चीन द्वारा अधिकार कर लेने के बाद चीनी सैनिकों व हान समुदाय के लोगों का भी हस्तक्षेप तिब्बत में बढ़ता ही जा रहा था। इन हस्तक्षेपों के विरोध में पूर्वी तिब्बत के संपाओं ने सशस्त्र विद्रोह कर दिया। इस विद्रोह को चीन ने सफलतापूर्वक दबा दिया। अब तिब्बत के दैवीय शासक दलाई लामा पर भी चीन का दवाब बढ़ने लगा तथा दैवीय शासक इस समस्या का कोई समाधान न निकलता देख भारत में राजनीतिक शरण का अवसर तलाशने लगे। भारत सरकार द्वारा इसे स्वीकार कर लिये जाने के बाद दैवीय शासक अपने हज़ारों समर्थकों के साथ रात्रि प्रहर में चुपचाप भारत आ गए। भारत सरकार द्वारा दलाई लामा को राजनीतिक शरण प्रदान की गई थी, किंतु उन्हें भारत भूमि से किसी प्रकार की राजनीतिक गतिविधियाँ तथा 'निर्वासित सरकार' बनाने की इजाज़त नहीं दी गई थी। नेहरू ने उन्हें बातचीत के द्वारा तिब्बत समस्या का समाधान निकालने की सलाह दी तथा इस कार्य में भारत सरकार द्वारा दलाई लामा को पूर्ण सहयोग करने की बात कही। लेकिन भारत, चीन के साथ अपने संबंधों को लेकर स्वयं दुखी था तथा भारत की समस्या का भी कोई समाधान नहीं निकल पा रहा था।

इस दौरान सन् 1954 के पंचशील समझौते और सन् 1959 में दलाई लामा के भारत में राजनीतिक शरण लेने के पश्चात् भारत-चीन संबंधों में तेज़ी से बदलाव आ रहे थे और संबंधों में भाईचारे का स्थान परस्पर अविश्वास व वाद-प्रतिवाद लेते जा रहे थे। जुलाई 1958 में पेकिंग से प्रकाशित एक सरकारी चीनी पत्रिका 'चाइना पिक्टोरल' में प्रकाशित एक नक्शे में नेफा (अरुणाचल प्रदेश) और लद्दाख के एक बड़े भू-भाग को चीन के अंग के रूप में दर्शाया गया था। आधिकारिक वार्ताओं एवं दोनों देशों के प्रधानमंत्रियों के बीच लंबे पत्राचार के बावजूद भी कोई उचित समाधान नहीं निकला था।

अध्याय
15

1964 के पश्चात् भारतीय विदेश नीति (Indian Foreign Policy After 1964)

15.1 भारत-अमेरिका संबंध
15.2 भारत-सोवियत संघ संबंध
15.3 भारत-चीन संबंध
15.4 भारत का दक्षिण–एशिया के देशों के साथ संबंध
15.5 भारत का मध्य-पूर्व के देशों के साथ संबंध
15.6 भारत का एशिया-पैसिफिक एवं अफ्रीकी देशों के साथ संबंध

भारत के प्रथम प्रधानमंत्री नेहरू की मृत्यु के बाद सन् 1965 में उनके उत्तराधिकारी लालबहादुर शास्त्री बने। नरम व्यवहार, नाटा कद और किसी भी बाहरी आकर्षण से रहित उन्होंने धीरज और नेतृत्व के गुणों का प्रदर्शन किया। सन् 1965 में भारत और पाकिस्तान के बीच वास्तविक युद्ध उन्हीं के नेतृत्व में लड़ा गया था और 'जय जवान जय किसान' के नारे को उन्होंने ही जन-जन तक पहुँचाया था। युद्ध ने एक हद तक सेना के मनोबल को वापस लाने में मदद की, जो सन् 1962 के बाद चीन के साथ सीमा युद्ध में लगभग समाप्त-सा हो गया था। लेकिन भारत-पाक युद्ध किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुँचा। भारतीय दृष्टिकोण से तो यह किसी भी प्रकार से लाभदायक नहीं था। संयुक्त राष्ट्र ने युद्ध विराम कराने में सहायता की और सोवियत संघ ने शांतिवार्ता आयोजित कराने में पहल की थी। लालबहादुर शास्त्री ने पाकिस्तान के तत्कालीन राष्ट्रपति अयूब खान के साथ ताशकंद में मुलाकात की और सोवियत संघ के तत्कालीन प्रधानमंत्री अलेक्सी कोसीजिन के लगातार आग्रह के चलते एक समझौते पर हस्ताक्षर किये, जिसे ताशकंद समझौते के नाम से जाना गया। इसके द्वारा दोनों देश इस बात पर राज़ी हुए कि कश्मीर सहित सभी आपसी समस्याओं का समाधान शांतिपूर्ण उपायों से करेंगे। लेकिन पाकिस्तान के तत्कालीन विदेश मंत्री जुल्फिकार अली भुट्टो ने इसकी ज़बरदस्त निंदा की और इससे उनको सत्ता हासिल करने का मौका मिल गया।

दुर्भाग्य से ताशकंद समझौते पर हस्ताक्षर करने के शीघ्र बाद दिल का दौरा पड़ने से लालबहादुर शास्त्री की मृत्यु हो गई और जनवरी 1966 में इंदिरा गांधी स्वाधीन भारत की पहली महिला प्रधानमंत्री बनीं। इंदिरा गांधी ने सत्ता की बागडोर ऐसे हालात में सँभाली जब आंतरिक और अंतर्राष्ट्रीय वातावरण बेहद जटिल था। सबसे मुश्किल तो घरेलू हालात थे। लोक सभा में इंदिरा गांधी को स्पष्ट बहुमत प्राप्त नहीं था और वह वामपंथियों के समर्थन पर निर्भर थीं। सत्ता संतुलन केंद्र से निकलकर राज्यों के पास पहुँच गया था। नई सरकार खाद्य पदार्थों के गंभीर दलदल में फँसी थी। बाढ़ और सूखे की मार से त्रस्त देश दाने-दाने को मोहताज था। दिसंबर 1965 से मई 1966 के बीच केवल अमेरिका से ही पी.एल. 480 के अधीन लगभग 80 लाख टन अनाज का आयात किया गया था, जो उस समय काफी भारी बोझ था। इसके अलावा 23 देशों ने भारत को खाद्यान्न सहायता देने का वचन दिया था। मध्य प्रदेश, उड़ीसा, राजस्थान, महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश और पंजाब के अनेक जिलों के 46 लाख लोग अभाव की मार झेल रहे थे। कल्पना की जा सकती है कि देश की अर्थव्यवस्था और इसके विदेशी मुद्रा भंडार पर कितना दबाव रहा होगा। दबाव को कम करने और संयुक्त राज्य अमेरिका से भारी सहायता पाने की कोशिश में भारत ने अपनी मुद्रा का अवमूल्यन कर दिया, इसके अलावा सुरक्षा का वातावरण भी ठीक नहीं था। चीन और पाकिस्तान के साथ हुए युद्धों ने अर्थव्यवस्था को बेहद कमज़ोर कर दिया था। इन दोनों में से किसी भी पड़ोसी के साथ संबंध सामान्य होने की कोई संभावना नहीं थी।

लेकिन इंदिरा गांधी एक व्यवहारिक राजनीतिज्ञ थीं व इस बात को लेकर काफी सतर्क थीं कि विभिन्न राष्ट्रों के बीच भारत की स्थिति पहले से बेहतर एवं सशक्त हो। उनके प्रधानमंत्री बनने के कुछ वक्त पहले ही भारत अपने पड़ोसी देशों चीन एवं पाकिस्तान के साथ युद्ध कर चुका था। इन दोनों देशों के साथ भारत के संबंध बेहद खराब हो चुके थे। इसके अलावा पूंजीवादी खेमे तथा पश्चिमी देशों की तरफ से भी भारत को निराश ही होना पड़ा था। महाशक्तियों में से सोवियत संघ के साथ भारत के संबंध मधुर थे लेकिन अति दृढ़ता की स्थिति में नहीं थे। इसके अतिरिक्त गुट-निरपेक्ष आंदोलन भी महत्त्वहीन होता जा रहा था। इसका नेतृत्वकर्ता देश होने के कारण भारत की भूमिका भी अंतर्राष्ट्रीय मंच पर सिमटती जा रही थी। ऐसी विषम परिस्थिति में इंदिरा गांधी ने इस बात की आवश्यकता को महसूस किया कि वैश्विक पटल पर यदि भारत की प्रभावशाली स्थिति को बनाए रखना है तो पहले उसे आंतरिक तौर पर सशक्त बनाना होगा तथा विभिन्न देशों से व्यावहारिक आधार पर द्विपक्षीय संबंध बनाने होंगे।

यद्यपि नेहरू के काल में विकसित विदेश नीति की निरंतरता इस दौरान भी बनी रही, पर अब उसमें आदर्शवादिता के साथ-साथ व्यावहारिकता का अंश भी बढ़ाया गया। इंदिरा गांधी के समय विभिन्न देशों और राष्ट्र समूहों के साथ भारत के वैदेशिक संबंधों को बनाने का प्रयास किया गया।

अध्याय
16

1947-64 के बीच भारतीय अर्थव्यवस्था (Indian Economy During 1947–64)

16.1 आर्थिक विकास के प्रारंभिक विचार (स्वतंत्रता पूर्व एवं पश्चात्)
16.2 स्वतंत्र भारत की औद्योगिक नीति
16.3 पहली तीन पंचवर्षीय योजनाएँ

आज़ादी के समय भारत की स्थिति दयनीय थी, उपनिवेशवाद ने अर्थव्यवस्था और समाज को बर्बाद कर दिया था तथा उसे शेष विश्व में हो रहे आधुनिक औद्योगिक परिवर्तनों से दूर रखा। अत्यंत घोर गरीबी, निरक्षरता, बर्बाद खेती और उद्योगों के अलावा उपनिवेशवाद द्वारा भारतीय अर्थतंत्र और समाज में लाई गई ढांचागत विकृतियों ने आत्मनिर्भर विकास का काम अत्यंत कठिन बना दिया था। भारतीय अर्थव्यवस्था के विभिन्न हिस्सों के बीच भंग संबंध और ब्रिटेन की अर्थव्यवस्था पर उसकी अनिवार्य निर्भरता, भारतीय अर्थव्यवस्था की तत्कालीन ढाँचागत विकृति का ही उदाहरण है।

स्वतंत्र भारत के तीव्र औद्योगिक विकास के लिये इसी औपनिवेशिक विरासत को तोड़ना ज़रूरी था। प्रथम औद्योगिक क्रांति के दो सौ वर्षों बाद और कई अन्य देशों में औद्योगिक क्रांति के सौ वर्षों बाद भारत का आधुनिक औद्योगीकरण करना एक विशाल कार्य था। उपनिवेशवाद द्वारा निर्मित इन समस्याओं के अलावा भारत के सामने पूरी तरह बदली हुई रणनीतिक एवं आर्थिक परिस्थितियाँ थीं। यद्यपि उपनिवेशवाद से स्वतंत्र हुए कई अन्य देशों के मुकाबले भारत कई मामलों में अनुकूल स्थिति में था। 1914 और 1947 के बीच भारतीयों के स्वामित्व में और उनके द्वारा नियंत्रित एक छोटा, किंतु स्वतंत्र औद्योगिक आधार देश में तैयार हो चुका था। दोनों विश्वयुद्धों एवं तीस के दशक की वैश्विक महामंदी के परिणामस्वरूप साम्राज्यवाद के कमजोर पड़े शिकंजे का फायदा उठाकर यह कार्य संभव हुआ। भारत की आज़ादी आते-आते भारतीय उद्यमी भारत में यूरोपीय उद्यम का सफलतापूर्वक मुकाबला कर पा रहे थे। इस प्रकार वे भारत के औद्योगिक उत्पादन के एक बड़े हिस्से पर अपना अधिकार कर सके। भारतीय पूंजीपतियों का वित्तीय क्षेत्र जैसे– बैंकिंग, जीवन बीमा इत्यादि पर भी प्रभुत्व स्थापित हो गया था।

अत: आज़ादी के वक्त तक उपनिवेशवादी इतिहास के बावजूद और उसके विरोध में, भारत में एक ऐसा स्वतंत्र आर्थिक आधार तैयार हो गया था जिसके आधार पर आगे बढ़ा जा सकता था तथा स्वतंत्र और तेज औद्योगीकरण अपनाया जा सकता था।

ब्रिटिश भारत में उद्योग धंधों का जो सीमित विकास हुआ भी वह ब्रिटेन के सहयोग से नहीं वरन् ब्रिटिश बाधाओं के बावजूद हुआ था। स्वतंत्रता से पूर्व ब्रिटिश औपनिवेशिक आर्थिक प्रभाव स्थान एवं समय के हिसाब से भिन्न था, अर्थात् पूरे भारतवर्ष में इनकी आर्थिक नीतियाँ सदैव बदलती रहीं तथा इन परिवर्तित आर्थिक नीतियों के कारण पड़ने वाले हानिकारक एवं लाभप्रद प्रभाव भी अलग-अलग रहे। इस प्रकार देश के विभिन्न हिस्सों में पड़ने वाला प्रभाव भी अलग-अलग था। ब्रिटिश आर्थिक नीतियों के कारण ही पश्चिमी भारत की तुलना में पूर्वी भारत को ज़्यादा नुकसान हुआ और इसके संयुक्त प्रभाव के रूप में स्वतंत्रता के समय गुजरात व महाराष्ट्र की आर्थिक स्थिति बिहार, बंगाल, उड़ीसा एवं पूर्वोत्तर के राज्यों से ज़्यादा बेहतर थी। पश्चिमी भारत में इस काल में कुछ उद्योगों की स्थापना भी इसका एक कारण था। 20वीं सदी के प्रारंभ से ही राष्ट्रीय आंदोलनों के प्रतिरोध एवं तमाम अंतर्राष्ट्रीय कारकों के प्रभाव से ब्रिटिश साम्राज्यवाद कमजोर पड़ने लगा था। इस दौर में ब्रिटिश शासक राजनीति के साथ-साथ कुछ आर्थिक रियायतें जैसे-इस्पात, चीनी, वस्त्र, कागज, सीमेंट आदि उद्योगों को शुष्क संरक्षण देने के लिये मजबूर हुए। इससे भारतीय उद्योग, जो अब तक चाय, कॉफी, जूट, तंबाकू, रबर, अभ्रक, मैगनीज जैसी निर्यात प्रधान वस्तुओं के उत्पादन तक ही सीमित था, का विस्तार संभव हुआ। फिर भी आधुनिक विनिर्माण उद्योग का जो विकास हुआ भी वह परंपरागत हस्तशिल्प उद्योगों के विनाश से होने वाले नुकसान के मुकाबले बहुत कम था। ब्रिटिश भारत में व्याप्त इन स्थितियों से उत्पन्न व्यापक दरिद्रता व लोगों में क्रय शक्ति की कमी ने भी एक ठोस घरेलू-बाज़ार के विकास को बाधित किया। हालांकि ब्रिटिश भारत में विकसित उद्योगों एवं तत्पश्चात् राज्य की सकारात्मक भूमिका के कारण भारत अपने-आपको नव-उपनिवेशवाद के चंगुल से बचा पाया।

16.1 आर्थिक विकास के प्रारंभिक विचार (स्वतंत्रता पूर्व एवं पश्चात्)
[Initial Thoughts of Economic Development (Pre and Post Independence)]

महात्मा गांधी अक्सर कहते थे कि 'भारत की आत्मा उसके गांवों में निवास करती है।' आज़ादी के समय भारत अधिकांशत: किसानों और मजदूरों का देश था। इसकी करीब तीन-चौथाई आबादी कृषि कार्य में लगी थी और देश का 60% सकल घरेलू

अध्याय
17

1965–1991 के मध्य भारतीय अर्थव्यवस्था (Indian Economy During 1965-1991)

17.1 साठ के दशक के मध्य का संकट
17.2 1965–1991 के बीच भारतीय अर्थव्यवस्था की उपलब्धियाँ

17.1 साठ के दशक के मध्य का संकट *(Crisis in Mid of Sixties)*

तीसरी पंचवर्षीय योजना के दो वर्ष शेष रहते ही 27 मई, 1964 को प्रथम भारतीय प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू की मुत्यु हो गई। नेहरूजी की मृत्यु के बाद, एक छोटे शहर के निम्न मध्यवर्गीय परिवार से आए लाल बहादुर शास्त्री को भारत का प्रधानमंत्री बनाया गया। लाल बहादुर शास्त्री और जवाहरलाल नेहरू की तुलना शायद वैसी ही है जैसे-अमेरिकी राष्ट्रपति हेरी एस ट्रूमैन और फ्रैंकलिन डेलिनो रूजवेल्ट की। नेहरू और रूजवेल्ट दोनों ही उच्चवर्गीय परिवार से संबंध रखते थे और दोनों लंबे समय तक सत्ता में रहे थे। दोनों ने ही अपने देश और समाज सुधार के मौलिक उपाय शुरू किये थे और इसके लिये दोनों की तारीफ हुई थी। वहीं दूसरी तरफ हेनरी ट्रूमैन की तरह ही लाल बहादुर शास्त्री एक छोटे से शहर के निम्न मध्यवर्गीय परिवार से आते थे। उन दोनों ने ही अपनी करिश्माई शख्सियत की कमी को अपने दृढ़निश्चयी स्वभाव और खुले दिमाग की सोच से पाटने की कोशिश की थी। हाँ, शास्त्री और ट्रूमैन के बीच जिस बिंदु पर तुलना नहीं हो सकती है वो है दोनों के सत्ता में रहने की समयावधि। जहाँ हेनरी ट्रूमैन सात साल तक अमेरिका के राष्ट्रपति रहे, वहीं शास्त्री की प्रधानमंत्री बनने के महज दो साल के भीतर ही मृत्यु हो गई।

सन् 1965 की लड़ाई के वक्त प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री ने 'जय जवान, जय किसान' का नारा दिया था। गांधीवादी अहिंसा और शांति के साए में आज़ादी पाए एक मुल्क के लिये सेना के जवानों का सलाम करना ज़रूर खास बात थी। उसी तरह की खास बात थी किसानों को सलामी देना, खासकर एक ऐसे मुल्क में जिसे आज़ादी के बाद ब्लास्ट फर्नेस और पन बिजली परियोजनाओं को पूरा करने की नसीहत दी गई थी। प्रधानमंत्री बनने के बाद शास्त्री ने जो पहला काम किया था, वो ये था कि उन्होंने बजट में कृषि के लिये ज़्यादा राशि का आवंटन किया। वे पिछले कुछ सालों से देश में अनाज उत्पादन में कमी को लेकर काफी चिंतित थे। हाल ही में अनाज उत्पादन की वृद्धि दर, आबादी की वृद्धि दर के करीब पहुँच गई थी। ऐसे में अगर बारिश धोखा दे देती तो पूरे देश में अफरा-तफरी मच जाती और अनाज की जमाखोरी बढ़ जाती थी। सरकार को अनाज की कमी वाले इलाकों में अनाज की आपूर्ति करनी पड़ती। भारत 1964-1965 में सूखे का सामना कर चुका था।

इस समस्या के स्थायी निदान के लिये लाल बहादुर शास्त्री ने सी. सुब्रह्मण्यम को खाद्य एवं कृषि मंत्रालय का ज़िम्मा सौंपा। 30 जनवरी, 1910 को सुब्रह्मण्यम का जन्म एक किसान परिवार में हुआ था और उन्होंने साइंस और कानून में डिग्री हासिल की थी। वे आज़ादी की लड़ाई मे भी शरीक हुए थे और उससे पहले वकालत के पेशे में थे। वे संविधान सभा के सदस्य भी रहे थे और केंद्रीय मंत्रिपरिषद में शामिल होने से पहले वे मद्रास प्रांत के अति सम्मानित मंत्री रह चुके थे। उन्हें तीव्र बुद्धि और आक्रामक कार्यशैली का माना जाता था। यही वजह थी कि पंडित नेहरू ने उन्हें प्रतिष्ठित माने जाने वाले इस्पात और खनन मंत्रालय का जिम्मा सौंपा था। सचमुच इस्पात मंत्रालय से कृषि मंत्रालय में आना एक बड़े परिवर्तन का सूचक था। बड़े ही उत्साह के साथ वे अपने नए काम में जुट गए। उन्होंने कृषि-विज्ञान के पुनर्गठन, कृषि वैज्ञानिकों की काम की स्थिति में सुधार और उनके वेतनमान को तर्कसंगत बनाने पर ध्यान केंद्रित किया। इसके साथ ही उन्होंने वैज्ञानिकों के काम में नौकरशाहों की दखलअंदाज़ी को भी कम करने की कोशिशें कीं। उनके कार्यकाल में सुषुप्त संस्था मानी जाने वाली भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद को नई ज़िंदगी और पहचान मिली। आईसीएआर (Indian Council of Agricultural research) को सक्रिय करने के अलावा सुब्रह्मण्यम ने राज्य सरकारों को कृषि विश्वविद्यालय खोलने के लिये प्रोत्साहित किया ताकि क्षेत्र विशेष के हिसाब से अलग-फसलों पर शोध किया जा सके। उन्होंने प्रायोगिक खेती भी शुरू की और उन्नत किस्म के बीजों के उत्पादन के लिये भारतीय बीज निगम की स्थापना की। इस निगम का काम बड़े पैमाने पर उन्नत किस्म के बीजों का उत्पादन करना था, जिसका इस्तेमाल सरकार द्वारा प्रस्तावित सघन कृषि में होना था।

कृषि सुधार के इस व्यापक और अहम काम में सुब्रह्मण्यम के जो दो मुख्य सहयोगी थे, वे भी तमिल ही थे। एक थे कृषि सचिव बी. शिवरामन और दूसरे थे वैज्ञानिक एम.एस. स्वामीनाथन। एम.एस. स्वामीनाथन, शोधकर्ताओं की उस टीम का निर्देशन

अध्याय
18

भारत-पाक युद्ध (Indo-Pak War)

18.1 कॉन्ग्रेस की सिंडिकेट प्रणाली
18.2 भारत-पाक युद्ध की पृष्ठभूमि
18.3 ताशकंद समझौता

18.1 कॉन्ग्रेस की सिंडिकेट प्रणाली *(Syndicate System of Congress)*

नेहरू के निधन के बाद भारतीय प्रधानमंत्री का चुनाव कॉन्ग्रेसी नेताओं के एक समूह द्वारा किया गया, जिन्हें सामूहिक रूप से सिंडिकेट के नाम से जाना जाता था। यह सिंडिकेट संभवत: सल्तनत काल के शासक इल्तुतमिश के चालीसा (तुर्कान-ए-चहलगानी) के समतुल्य था। सन् 1963 में बने इस सिंडिकेट ग्रुप में तत्कालीन कॉन्ग्रेस अध्यक्ष के. कामराज और पार्टी के कई प्रदेश स्तर के कद्दावर नेता, जैसे बंगाल के अतुल्य घोष, बंबई के ए.के. पाटिल, आंध्र के एन. संजीव रेड्डी तथा मैसूर के एस. निजलिंगप्पा शामिल थे। देसाई उनके लिये अवांछनीय थे। उन्होंने शास्त्री का अनुमोदन इसलिये किया कि उनके अन्य गुणों के अलावा पार्टी में उन्हें ऐसा व्यापक समर्थन हासिल था, जो पार्टी को एकजुट रख सकता था। उन्हें यह आशा भी थी कि शास्त्री उनकी इच्छाओं के प्रति अधिक लचीले होंगे और पार्टी में उनके नेतृत्व को चुनौती नहीं देंगे। हालाँकि कुछ समय गुज़रने के बाद शास्त्री ने ज़्यादा स्वाधीनता के साथ काम करना शुरू कर दिया। विभिन्न नीतिगत पहलुओं का स्वतंत्रता एवं निष्पक्षता के साथ विश्लेषण कर प्रधानमंत्री को यथोचित सूचना व सलाह देने के लिये उन्होंने अपने प्रमुख निजी सचिव लक्ष्मीकांत झा की अध्यक्षता में एक प्रधानमंत्री सचिवालय का गठन किया जिसने आगामी वर्षों में भारत में राजनीति व प्रशासन के संचालन में अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की।

कॉन्ग्रेस के तत्कालीन सिंडिकेट ग्रुप के अलावा अन्य पार्टी नेता भी किसी किस्म की ऐसी कलह से बचना चाहते थे, जिससे पार्टी में मौजूद गुटबाज़ी और न भड़क पाए। कामराज ने यह पता लगाने की कोशिश की कि किस उम्मीदवार के इर्द-गिर्द पार्टी सांसदों की सबसे व्यापक आम सहमति होगी तथा यह घोषणा कर दी कि शास्त्री आमतौर पर अधिक स्वीकार्य हैं। हालाँकि देसाई ने निजी तौर पर यह कहा कि सिंडिकेट ने जोड़-तोड़ से यह निर्णय करवाया है फिर भी उन्होंने इसे स्वीकार कर लिया और एक गरिमापूर्ण तरीके से इस प्रतियोगिता से बाहर हो गए। लाल बहादुर शास्त्री पार्टी सांसदों द्वारा निर्विरोध संसदीय दल के नेता चुन लिये गए और 2 जून, 1964 यानी नेहरू के देहांत के दो सप्ताह के अंदर ही प्रधानमंत्री के रूप में अपने पद को सँभाल लिया। इस प्रकार सत्ता हस्तांतरण बहुत ही परिपक्व, गरिमापूर्ण और निर्विघ्न तरीके से संपन्न हो गया। इसने भारतीय जनवाद की ताकत को साफतौर पर उजागर कर दिया।

शास्त्री जी के प्रधानमंत्री बनने के समय देश के भीतर व बाहर कई समस्याएँ विकराल रूप ग्रहण कर रही थीं। देश अभी चीन के आक्रमण और नेहरू की मृत्यु के सदमे से भी उबर नहीं पाया था कि सन् 1965 में भयंकर अकाल का सामना करना पड़ा। कृषि उत्पादन कम हो रहा था। सन् 1965 में कई भारतीय राज्य गंभीर सूखे की चपेट में आ गए थे। खाद्यान्नों का आपातकालीन भंडार खतरनाक सीमा तक कम हो गया था। यह बिल्कुल स्पष्ट हो रहा था कि इस स्थिति से निपटने के लिये दीर्घकालीन उपायों की ज़रूरत थी, परंतु इस प्रकार के प्रयास भी नहीं किये जा रहे थे। विशेष तौर पर खाद्यान्न संपन्न राज्यों के मुख्यमंत्रियों ने सहयोग करने से साफ इनकार कर दिया था। नई सरकार ने इन समस्याओं से निपटने के लिये वैधानिक शासन प्रणाली की शुरुआत की एवं राज्य खाद्य व्यापार निगम की विधिपूर्वक स्थापना कर खाद्यान्न भंडार बढ़ाने की कोशिश की, पर इसमें अपेक्षित सफलता नहीं मिली। अकाल प्रभावित राज्यों की स्थिति और बदतर होने लगी। यह स्पष्ट था कि खाद्यान्न पर आत्मनिर्भरता ही ऐसी स्थिति का दीर्घकालिक उपाय है। इस संदर्भ में हरित क्रांति योजना का शुभारंभ एक सकारात्मक घटना थी, जिसका उद्देश्य कृषि उत्पादन में वृद्धि और दीर्घकालीन रूप से अनाजों के उत्पादन में आत्मनिर्भरता हासिल करना था। लेकिन बाद में इंदिरा गांधी के शासन काल में ही इस योजना पर विधिवत् काम शुरू हो पाए।

अति विषम आर्थिक परिस्थितियों के साथ-साथ कुछ राजनीतिक मुद्दे भी आंतरिक समस्या के रूप में विद्यमान थे। इनमें सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण मुद्दा था, सन् 1965 के प्रारंभ से ही हिंदी बनाम अंग्रेज़ी के मुद्दे का भड़क उठना। संवैधानिक प्रावधानों

अध्याय
19

प्रधानमंत्री के रूप में इंदिरा गांधी का कार्यकाल (Indira Gandhi's Tenure as Prime Minister)

19.1 प्रधानमंत्री के रूप में इंदिरा गांधी का प्रथम कार्यकाल
19.2 1971 का भारत-पाक युद्ध
19.3 प्रधानमंत्री के रूप में इंदिरा गांधी का द्वितीय कार्यकाल
19.4 आपातकाल की घोषणा

19.1 प्रधानमंत्री के रूप में इंदिरा गांधी का प्रथम कार्यकाल *(Indira Gandhi's First Tenure as Prime Minister)*

लाल बहादुर शास्त्री के आकस्मिक निधन के बाद एक बार फिर से गुलजारी लाल नंदा को कार्यवाहक प्रधानमंत्री बनाया गया और कामराज पुनः प्रधानमंत्री की खोज में निकल पड़े। इस बार फिर मोरारजी देसाई ने अपना दावा पेश किया और इस बार भी कामराज ने उनका दावा एक ज़्यादा स्वीकार्य उम्मीदवार के पक्ष में खारिज़ कर दिया। कामराज का मन जिस उम्मीदवार के पक्ष में झुक रहा था, वह थीं- श्रीमती इंदिरा गांधी। वह युवा थीं, महज़ 48 साल की, उनका व्यक्तित्व आकर्षक था, दुनिया भर के नेता उन्हें जानते थे और सबसे बड़ी बात ये थी कि वह उस पंडित जवाहरलाल नेहरू की बेटी थी, जिसे जनता ने बतौर प्रधानमंत्री बहुत इज्ज़त और प्यार दिया था। देश बहुत कम वक्त में दो बड़े नेताओं को खो चुका था, ऐसे हालात में साफ तौर पर वह सबसे ज़्यादा पसंदीदा विकल्प के रूप में सामने थीं। ये बात सही है कि श्रीमती गांधी में प्रशासनिक अनुभवों की कमी थी, इसके पहले वह लाल बहादुर शास्त्री मंत्रिमंडल में सूचना एवं प्रसारण मंत्री थीं। कॉन्ग्रेस सिंडिकेट ने ये सोचा कि उन्हें प्रधानमंत्री बनाकर वे सामूहिक नेतृत्व के अधीन सरकार चला पाने में कामयाब हो जाएंगे।

इन वर्षों में कॉन्ग्रेस का जनाधार भी तेज़ी से खिसक रहा था एवं पार्टी व्यापक गुटबंदी का शिकार हो रही थी। संसदीय गरिमा का भी बड़ी तेज़ी से क्षरण हो रहा था तथा विपक्ष के कुछ तथाकथित समाजवादी नेताओं द्वारा श्रीमती गांधी पर व्यक्तिगत टीका-टिप्पणी की भी घटनाएँ हुईं। प्रसिद्ध समाजवादी नेता राम मनोहर लोहिया ने श्रीमती गांधी को कई बार 'गूंगी गुड़िया' कहा। श्रीमती गांधी ने इन व्यक्तिगत आरोपों-प्रत्यारोपों को सहन किया, क्योंकि अगले वर्ष चुनाव होने थे एवं कॉन्ग्रेस संगठन पर उनकी पकड़ अभी कमज़ोर थी। कामराज ने कॉन्ग्रेस शासित मुख्यमंत्रियों से मशविरा किया और सभी ने इंदिरा गांधी के नाम पर मुहर लगा दी। इधर मोरारजी देसाई भी प्रधानमंत्री पद से नीचे कुछ भी नहीं सोच रहे थे। कामराज और कॉन्ग्रेस सिंडिकेट इंदिरा गांधी के पक्ष में था। कॉन्ग्रेस संगठन में बहुत से लोगों को देसाई की कार्यशैली से भारी एतराज था। ऐसी स्थिति में नेहरू की बेटी कॉन्ग्रेस दल का चुनाव भारी बहुमत से जीत गई। जब प्रधानमंत्री पद के लिये 19 जनवरी, 1966 को कॉन्ग्रेस संसदीय दल का चुनाव हुआ तो इंदिरा गांधी 169 मतों की तुलना में 355 मतों से जीत गईं।

उस समय देश में कई समस्याएँ विद्यमान थीं। पंजाब के विभाजन का मुद्दा सुलग रहा था, मिज़ोरम में भी कुछ मिज़ो विद्रोहियों की बगावत जारी थी। देश के अन्य हिस्सों में भी बहुत अच्छी स्थिति नहीं थी, किसी-न-किसी प्रकार का असंतोष लगभग सर्वत्र विद्यमान था। असंतोष कई स्तरों पर था, क्योंकि उस समय संपूर्ण देश गंभीर आर्थिक संकट से जूझ रहा था। मानसून की असफलता, व्यापक सूखा, खेती की पैदावार में गिरावट, गंभीर खाद्य संकट, विदेशी मुद्रा भंडार में कमी, औद्योगिक उत्पादन और निर्यात में गिरावट के साथ सैन्य खर्चे में भारी वृद्धि हुई थी। नियोजन और आर्थिक विकास के संसाधनों को सैन्य मद में लगाना पड़ा। इन सारी बातों से देश की आर्थिक स्थिति विकट हो गई थी। इंदिरा गांधी की सरकार के शुरुआती फैसलों में से एक था रुपये का अवमूल्य करना, जो कि अमेरिकी दबाव में आकर किया गया था। लगातार दो वर्षों के अकाल ने कृषि को तबाह कर रखा था। इसकी वजह से मुद्रास्फीति में इज़ाफा हो रहा था, कालाबाजारी चरम पर थी, गरीबी एवं भुखमरी का व्यापक प्रभाव था। प्रशासकीय खर्च के बढ़ जाने से राजकोषीय स्थिति भी अति विषम थी।

अकाल की स्थिति से कुशलतापूर्वक निपटने के लिये खाद्यान्नों के एकत्रीकरण एवं सार्वजनिक वितरण पर ज़ोर देकर इन स्थितियों से निपटने का प्रयास किया गया। अर्थव्यवस्था को सुचारु रूप से चलाने के लिये अति कठोर वित्तीय उपायों की ज़रूरत थी। ऐसे कठोर निर्णयों को लेने में श्रीमती गांधी की सरकार पूरी तरह से अक्षम थी क्योंकि निर्णय लेने की प्रधानमंत्री से ज़्यादा शक्ति सिंडिकेट के हाथों में थी। आर्थिक स्थिति में सुधार लाने के लिये तथा निर्यात को बढ़ावा देने के उद्देश्य से वैश्विक वित्त प्रदान करने वाली संस्थाओं, यथा-विश्व बैंक व अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष से आर्थिक सहायता पाने के लिये उनके दबाव में आकर

अध्याय
20

1977–91 के बीच की राजनीतिक स्थिरता व अस्थिरता (Political Stability and Instability Between 1977–91)

20.1 जनता पार्टी की सरकार (1977–80)
20.2 प्रधानमंत्री के रूप में इंदिरा गांधी का तीसरा कार्यकाल: 1980–84
20.3 प्रधानमंत्री के रूप में राजीव गांधी का कार्यकाल
20.4 राजीव गांधी के कार्यकाल में विवादित मुद्दे

20.1 जनता पार्टी की सरकार (1977–80) *[Government of Janata Party (1977–80)]*

18-19 महीने के आपातकाल के बाद 1977 के जनवरी माह में सरकार ने चुनाव करवाने का फैसला किया। इसी के मुताबिक सभी नेताओं और राजनीतिक कार्यकर्त्ताओं को जेल से रिहा कर दिया गया तथा मार्च 1977 ई. में चुनाव हुए। ऐसे में विपक्ष को चुनावी तैयारी का बड़ा कम समय मिला। लेकिन राजनीतिक बदलाव की गति तेज़ थी। आपातकाल लागू होने के पहले ही बड़ी विपक्षी पार्टियाँ एक-दूसरे के नज़दीक आ रही थी। चुनाव के ठीक पहले विपक्षी नेताओं ने कॉन्ग्रेस (ओ), जनसंघ, भारतीय लोकदल और सोशलिस्ट पार्टी ने एकजुट होकर जनता पार्टी नाम से एक नया दल बनाया। इस नवनिर्मित पार्टी ने जयप्रकाश नारायण का नेतृत्व स्वीकार किया। कॉन्ग्रेस के कुछ नेता भी, जो आपातकाल के ख़िलाफ थे, यथा-जगजीवन राम, हेमवती नंदन बहुगुणा तथा नंदिनी सतपथी के अचानक दल-बदल से कॉन्ग्रेस पार्टी को भारी धक्का लगा। कॉन्ग्रेस के कुछ अन्य नेताओं ने जगजीवन राम के नेतृत्व में एक नई पार्टी बनाई। इस पार्टी का नाम 'कॉन्ग्रेस फॉर डेमोक्रेसी' था और यह पार्टी भी जनता पार्टी में शामिल हो गई।

1977 के चुनावों को जनता पार्टी ने आपातकाल के ऊपर जनमत संग्रह का रूप दिया। इस पार्टी ने चुनाव प्रचार में शासन के लोकतांत्रिक चरित्र और आपातकाल के दौरान की गई ज़्यादतियों पर ज़ोर दिया। हज़ारों लोगों की गिरफ्तारी और प्रेस की सेंसरशिप की पृष्ठभूमि में जनमत कॉन्ग्रेस के विरुद्ध था। जनता पार्टी के गठन के कारण यह भी सुनिश्चित हो गया कि गैर-कॉन्ग्रेसी वोट एक ही जगह पड़ेंगे। यह कॉन्ग्रेस के लिये बड़ी विषम परिस्थिति थी। इस चुनाव के अंतिम नतीजों ने सबको चौंका दिया। आज़ादी के बाद पहली बार ऐसा हुआ कि कॉन्ग्रेस लोकसभा का चुनाव हार गई। कॉन्ग्रेस को लोकसभा की मात्र 154 सीटें मिली थी। उसे 35% से भी कम वोट हासिल हुए। जनता पार्टी तथा उसके साथी दलों को लोकसभा की कुल 542 सीटों में से 330 सीटें मिली। खुद जनता पार्टी ने अकेले 295 सीटों पर विजय प्राप्त की थी और उसे स्पष्ट बहुमत मिला था। उत्तर भारत में चुनावी माहौल कॉन्ग्रेस के एकदम ख़िलाफ था। कॉन्ग्रेस बिहार, उत्तर प्रदेश, दिल्ली, हरियाणा और पंजाब में एक भी सीट न पा सकी। राजस्थान और मध्य प्रदेश में उसे महज़ एक-एक सीटें मिली। इंदिरा गांधी रायबरेली से और उनके पुत्र संजय गांधी अमेठी से चुनाव हार गए। महाराष्ट्र, गुजरात और उड़ीसा में उसने कई सीटों पर अपना कब्ज़ा बरकरार रखा था और दक्षिण भारत के राज्यों में तो एक तरह से उसकी चुनावी-विजय का चक्का बेरोकटोक चला था। इसके कई कारण रहे। पहली बात तो यह थी कि आपातकाल का प्रभाव हर राज्य पर एकसमान नहीं पड़ा था। लोगों को जबरन उजाड़ने और विस्थापित करने अथवा जबरन नसबंदी करने का काम उत्तर भारत के राज्यों में हुआ था, लेकिन उससे भी ज़्यादा महत्त्वपूर्ण बात यह थी कि उत्तर भारत का मध्य वर्ग कॉन्ग्रेस से दूर जाने लगा था। बचे मध्य वर्ग के कई तबके जनता पार्टी को एक मंच के रूप में पाकर इससे आ जुड़े।

जनता पार्टी एवं उनके सहयोगियों में एकदम प्रारंभ से ही कुछ अंतर्निहित कमज़ोरियाँ और भिन्नताएँ थीं। इस संपूर्ण गठबंधन का सबसे प्रमुख मिशन था– 'इंदिरा हटाओ'। परंतु अब यह मिशन पूरा हो चुका था और इसके बाद आगे क्या, कैसे और किस प्रकार सामूहिक प्रयासों से प्राप्त किया जाना है इस पर मतैक्य का अभाव होना ही था, क्योंकि विचारधारा एवं नीतियों के संदर्भ में इसके घटक दल बहुधा विरोधी ध्रुवों पर खड़े थे। पारस्परिक तालमेल का अभाव तो शुरू से ही इस गठबंधन में था। चुनाव के बाद नेताओं के बीच प्रधानमंत्री के पद के लिये होड़ मच गई। इस होड़ में मोरारजी देसाई, चरण सिंह और जगजीवन राम शामिल थे। देसाई तो 1966-67 से ही इंदिरा गांधी के प्रतिद्वंद्वी थे। इस मसले पर बुजुर्ग नेताओं जयप्रकाश नारायण व आचार्य जे.बी. कृपलानी ने पर्याप्त विचार-विमर्श के बाद श्री मोरारजी देसाई के नाम पर मुहर लगाई। 81 वर्षीय देसाई ने 23 मार्च, 1977 को प्रधानमंत्री का पद ग्रहण किया। मोरारजी देसाई ने अत्यंत सावधानीपूर्वक गठबंधन के अन्य प्रमुख नेताओं को महत्त्वपूर्ण पद दिये ताकि किसी प्रकार का असंतोष पार्टी के अंदर उत्पन्न न हो। श्री जगजीवन राम एवं चौधरी चरण सिंह को उपप्रधानमंत्री का पद दिया गया जबकि भारतीय जनसंघ के नेताओं श्री अटल बिहारी वाजपेयी एवं लाल कृष्ण आडवाणी को क्रमशः विदेश मंत्रालय तथा सूचना और प्रसारण मंत्रालय सौंपा गया।

अध्याय
21

स्वतंत्र भारत में भूमि-सुधार
(Land Reforms in Independent India)

21.1 ब्रिटिश भारत में भूमि अधिकार प्रणाली
21.2 जमींदारी उन्मूलन एवं काश्तकारी सुधार
21.3 भूदान एवं ग्रामदान आंदोलन
21.4 हरित क्रांति

21.1 ब्रिटिश भारत में भूमि अधिकार प्रणाली *(Land Tenure System in British India)*

उपनिवेशवाद का भारतीय कृषि पर बड़ा ही घातक प्रभाव पड़ा। यह घटना उस समय की है जब किसी भी अन्य प्राक्-औद्योगिक समाज के समान भारतीय कृषि भी देश के कुल उत्पादन में पूरी तरह प्रभुत्वकारी स्थिति में थी। उपनिवेशवाद ने बिना नई गतिशील शक्तियों को प्रवृत्त किये परंपरागत भारतीय-खेती के आधार को बर्बाद कर दिया। इस दौरान कृषि के वाणिज्यीकरण और किसानों के बीच विभेदीकरण की प्रक्रिया जोरों से चल रही थी। भारतीय कृषि व समाज भी संक्रमणकालीन दौर से गुजर रहा था, लेकिन भारतीय परिप्रेक्ष्य में यह संक्रमणकालीन दौर भारतीय कृषि व समाज के उत्थान की ओर नहीं था।

औपनिवेशिक शासन के अंतर्गत भारतीय कृषि में कुछ खास विशेषताएँ उभरीं। अंग्रेजों ने अपने हितों के अनुसार अलग-अलग समय में तथा अलग-अलग क्षेत्रों में भिन्न-भिन्न भू-राजस्व प्रणाली, जैसे- स्थायी बंदोबस्त, रैयतवाड़ी तथा महालवाड़ी व्यवस्था को अपनाया। इसके अन्य परिणाम चाहे जो रहे हो, किंतु इसका एक निश्चित परिणाम था- भारतीय कृषकों का अत्यधिक शोषण।

ज़मींदारी व्यवस्था *(Zamindari system)*

ज़मींदारी व्यवस्था के अंतर्गत जमींदार एवं सरकार के बीच सीधा संबंध स्थापित करने का प्रयास किया गया था। इस व्यवस्था की निम्नांकित विशेषताएँ थीं–

(i) यह व्यवस्था मुख्य रूप से उत्तर भारत में प्रचलित थी। इसमें सीधे कृषकों से भू-राजस्व संबंधी समझौते नहीं करके प्रभावशाली किसानों से समझौते किये गए जो स्वयं तो खेती नहीं करते थे परन्तु कृषकों से भू-राजस्व की वसूली कर उसका तयशुदा हिस्सा सरकार को देते थे। इन लोगों को ज़मींदार कहा गया।

(ii) इस व्यवस्था में ज़मींदारों को भूमि पर स्वामित्व दिया गया पर इसमें स्वामित्व का आधार समय पर भू-राजस्व की अदायगी करना था। समय पर राजस्व नहीं अदा करने से ऐसे ज़मींदार को बेदखल कर भू-स्वामित्व किसी और को दिया जा सकता था।

(iii) कृषकों को मात्र भू-किराएदार की स्थिति प्रदान की गई तथा भूमि पर उनके अधिकार को मान्यता नहीं दी गई। कृषकों के वन चारागाह आदि पर अधिकार एवं गांव के तालाबों आदि में मत्स्य पालन के अधिकारों को भी समाप्त कर दिया गया।

(iv) ज़मींदार भू-राजस्व अदा करने में विफल रहने वाले कृषक को उसकी भूमि व संपत्ति से बेदखल भी कर सकता था। प्रायः भू-राजस्व वसूली का काम अधिकारियों व अधीनस्थों को ही सौंपा जाता था।

(v) ज़मींदारी व्यवस्था के एक अन्य प्रकार के रूप में जागीरदारी व्यवस्था का विकास हुआ जिसमें शासक भूमि की जिम्मेदारी अपने अधीनस्थ सामंतों के जिम्मे छोड़ देते थे। इसको (सामंत) जागीरदार को लगान एवं नजराना पेश करने के अतिरिक्त कुछ प्रशासनिक व सैन्य सेवाएँ भी उपलब्ध करानी होती थीं। ऐसी व्यवस्था राजस्थान, हैदराबाद आदि रियासतों में प्रचलित थी।

रैयतवाड़ी व्यवस्था *(Ryotwari system)*

(i) रैयतवाड़ी व्यवस्था में मध्यस्थों की भूमिका नहीं होती थी क्योंकि कृषक अपनी भूमि का स्वयं मालिक होता था तथा वह सीधे सरकार से भू-राजस्व संबंधी करार करता था।

(ii) यह व्यवस्था मुख्य रूप से दक्षिण-पश्चिम एवं दक्षिण भारत में प्रचलित थी। इस व्यवस्था में भू-राजस्व की दरें समय-समय पर संशोधित की जा सकती थीं। भू-राजस्व निर्धारण करते समय भूमि के प्रकार का भी ध्यान रखा जाता था।

(iii) भू-राजस्व की दर काफी ऊँची रहती थी और फसल बर्बाद होने की स्थिति में भी भू-राजस्व वसूला जाता था।

(iv) भू-राजस्व अदा नहीं कर पाने की स्थिति में कृषकों को अपनी ज़मीनें गिरवी रखनी होती थी।

डी.एल.पी. बुकलेट्स की विशेषताएँ

- आयोग के नवीनतम पैटर्न पर आधारित अध्ययन सामग्री।
- पैराग्राफ, बुलेट फॉर्म, सारणी, फ्लोचार्ट तथा मानचित्र का उपयुक्त समावेश।
- विषयवस्तु की सरलता, प्रामाणिकता तथा परीक्षा की दृष्टि से उपयोगिता पर विशेष ध्यान।
- क्विक रिवीजन हेतु प्रत्येक अध्याय में महत्त्वपूर्ण तथ्यों का संकलन।
- प्रत्येक अध्याय के अंत में विगत वर्षों में पूछे गए एवं संभावित प्रश्नों का समावेश।

Website : www.drishtiIAS.com
E-mail : online@groupdrishti.com

DrishtiIAS
YouTube Drishti IAS
drishtiias
drishtithevisionfoundation

641, First Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-110009
Phones : 8750187501, 011-47532596